APPROVED BY THE TEXT-BOOK COMMITTEE, U. P.

SANSKRIT READER

Part 1

OR

संस्कृतशिक्षा

प्रथमो भागः

(व्याकरणोपेता)

BY

PANDIT SARADA PRASAD BHUTTACHARYA

PUBLISHED BY
RAM NARAIN LAL
PUBLISHER AND BOOKSELLER

1929

3rd Edition] [Five Annas.

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.
1st Edition 1921. 2nd Edition 1928. 3rd Edition 1929.

PREFACE.

WITH the view that Sanskrit may be learnt as easily as possible, this Sanskrit Reader Part I or Sanskrit Siksha is written. As it is impossible to learn Sanskrit without Grammar, rules of Grammar and examples are shewn and explained in the lessons. Besides, euphonic combination of letters (Sandhi) and declension of bases (Shabdarupa) are attached to the book for the facility of young learners.

KATRA ROAD, ALLAHABAD:
15th November, 1921.

S. P. BHUTTACHARYA.

SANSKRIT READER PART I

संस्कृतशिक्षा

प्रथमो भागः

स्वरवर्णाः

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
	ओ	औ	

व्यञ्जनवर्णाः

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य र ल व

श ष स ह

ं ः

क का कि की कु कू के कै को कौ

क्य क्र क्ल क्व क्त क्म र्क क्त्र

क्त्व कं कः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

सः गच्छति He is going—वह जा रहा है।
तौ गच्छतः—They two are going—वे दोनों जा रहे हैं।
ते गच्छन्ति—They are going—वे जा रहे हैं।

त्वम् गच्छसि—You are going—तुम जा रहे हो।
युवाम् गच्छथः—You two are going—तुम दोनों जारहे हो।
यूयम् गच्छथ—You are going—तुम (सब) जा रहे हो।

अहम् गच्छामि—I am going—मैं जा रहा हूँ।
आवाम् गच्छावः—We two are going—हम दोनों जा रहे हैं।
वयम् गच्छामः We are going—हम सब जा रहे हैं। (बहु०)

सः अगच्छत् He went—वह गया।
तौ अगच्छताम्—They two went—वे दोनों गये।
ते अगच्छन्—They went—वे सब गये (बहुवचन)।

त्वम् अगच्छः —You went—तुम गये।
युवाम् अगच्छतम्—You two went—तुम दोनों गये।
यूयम् अगच्छत—You went—तुम सब लोग गये।

अहम् अगच्छम्—I went—मैं गया।
आवाम् अगच्छाव—We two went—हम दोनों गये।
वयम् अगच्छाम—We went—हम सब लोग गये।

सः गच्छेत्—He should go—उसे जाना चाहिए।

तौ गच्छेताम्—They two should go—उन दोनों को जाना चाहिये।

ते गच्छेयुः—They should go—उन सब को जाना चाहिये।

त्वम् गच्छेः—You should go—तुझे जाना चाहिये।

युवाम् गच्छेतम्—You two should go—तुम दोनों को जाना चाहिये।

यूयम् गच्छेत—You should go—तुम सब को जाना चाहिये।

अहम् गच्छेयम्—I should go—मुझे जाना चाहिये।

आवाम् गच्छेव—We two should go—हम दोनों को जाना चाहिये।

वयम् गच्छेम—We should go—हम सब को जाना चाहिये।

सः गच्छतु—Let him go—उसे जाने दो।

तौ गच्छताम्—Let two of them go—उन दोनों को जाने दो।

ते गच्छन्तु—Let them go—उन सबों को जाने दो (बहुवचन)।

त्वम् गच्छ—You go (Singular)—तुम जाओ (एक वचन)।

युवाम् गच्छतम्—You two go—तुम दोनों जाओ।

यूयम् गच्छ—You go (Plural)—तुम सब जाओ।

अहम् गच्छानि—Let me go—मुझे जाने दो।

आवाम् गच्छाव—Let two of us go—हम दोनों को जाने दो।

वयम् गच्छाम—Let us go—हम सब को जाने दो।

सः गमिष्यति—He will go—वह जायगा।

तौ गमिष्यतः—They two will go—वे दोनों जायेंगे।

ते गमिष्यन्ति—They will go—वे सब जायेंगे (बहु वचन)।

त्वम् गमिष्यसि—You will go—तुम जाओगे (एक वचन।

युवाम् गमिष्यथः—You two will go—तुम दोनों जाओगे।

यूयम् गमिष्यथ—You will go—तुम सब जाओगे (बहु०)।

अहम् गमिष्यामि—I shall go—मैं जाऊँगा।

आवाम् गमिष्यावः—We two shall go—हम दोनों जायेंगे।

वयम् गमिष्यामः—We shall go—हम सब जायेंगे।

उल्लिखित दृष्टान्तों से यह विदित होता है कि क्रिया के तीन पुरुष होते हैं। सः, तौ, ते—ये तीनों रूप प्रथम पुरुष ((Third person) कर्त्ता के हैं। त्वम्, युवाम्, यूयम्—ये तीनों मध्यम पुरुष (Second person) कर्त्ता के रूप हैं। अहम् आवाम्, वयम्—ये तीनों उत्तम पुरुष (First person) कर्त्ता के रूप हैं अहम्, आवाम् वयम् (अस्मद् शब्द) तथा त्वम्, युवाम्, यूयम् (युष्मद् शब्द को) छोड़ कर शेष समस्त शब्द ही प्रथम पुरुष-

वाची हैं। यथा—सः तौ ते (तद् शब्द), राम, हरि, नर, गज, देव इत्यादि सभी शब्द प्रथम पुरुष के हैं। प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन—Singular, द्विवचन—Dual तथा बहुवचन—Plural—उक्त तीनों पुरुष ही समस्त काल में क्रिया के कर्त्ता होते हैं और प्रत्येक पुरुष के तीन तीन वचन होते हैं। अतएव ये ही नौ प्रकार के पद समस्त क्रियाओं के कर्त्ता हुआ करते हैं। अर्थात्—सः, तौ, ते ; प्रथम पुरुष के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन के कर्त्ता होते हैं; त्वम्, युवाम् यूयम्ः मध्यम पुरुष के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन के कर्त्ता होते हैं तथा अहम्, आवाम्, वयम्, क्रिया के उत्तम पुरुष के एकवचन, द्विवचन, और बहुवचन के कर्त्ता होते हैं। प्रत्येक क्रिया के साधारणतः तीन काल होते हैं :—वर्त्तमान, अतीत (भूत) और भविष्यत्। इनके अतिरिक्त अनुज्ञा (आज्ञा) प्रतीत होने पर अनुज्ञा (Imperative mood) तथा औचित्य अथवा विधि का तात्पर्य होने पर विधि लिङ् (Potential mood) का प्रयोग होता है।* इस पुस्तक में उक्त पाँच काल की क्रियाएं ही प्रदर्शित हुई हैं। सब धातुओं में ही उल्लिखित प्रकार से प्रत्येक काल के नौ नौ पद हुआ करते हैं। अर्थात् प्रथम पुरुष के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन, मध्यम पुरुष के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन तथा उत्तम पुरुष के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ये नौ पद होते हैं। और हर एक धातु में दो पद होते हैं। एक तो परस्मैपद दूसरा आत्मनेपद। परस्मैपद पहले हो चुका है, आत्मनेपद भी लिखा जाता है।

---

* इनके अतिरिक्त क्रिया के और और काल भी हैं, वे सब व्याकरणादि में पीछे देखने चाहिये।

The following verbs are conjugated alike :—

निम्न लिखित धातुओं के रूप समान होते हैं :—

हस्—to laugh—हँसना। वद्—to speak (say)—बोलना, कहना। दृश् (पश्य)—to see देखना। क्रन्द्—to cry रोना। स्पृश्—to touch छूना। भ्रम्—to roam (walk) घूमना, भटकना। त्यज्—to give up—छोड़ना। पत्—to fall गिरना। पठ्—to read पढ़ना। भू (भव)—to be or exist—होना। तप्—to shine चमकना। ज्वल्—to burn जलना। दह्—to burn जलाना। खाद्—to eat खाना। भज्—to divide or worship भाग देना, पूजना। गर्ज्—to roar गरजना। वह्—to flow—बहना। क्रीड्—to play—खेलना। स्था—to stay ठहरना। प्रच्छ् (पृच्छ्) to ask पूछना। पा (पिब्)—to drink पीना। इष् (इच्छ्) to wish चाहना। गै (गाय)—to sing गाना। नी (नय)—to lead ले जाना। धृ (धर्) to hold पकड़ना। निन्द् to blame निन्दा करना। पच्—to cook—पकाना। रक्ष् to protect—बचाना। वस्—to dwell रहना। वह्—to carry ढोना। शुच् (शोच) to lament सोच करना। हृ (हर) to steal—चोराना। ४—

उदाहरण—

स हसति—He laughs वह हँसता है। त्वं हससि—you are—laughing तुम हँस रहे हो वा हँसते हो। अहं हसामि—I laugh मैं हँसता हूँ। अहं वसामि—I dwell मैं रहता हूँ। स पचति—He cooks वह पकाता है। सूर्य्यस्तपति—The sun shines सूर्य्य चमकता है। त्वम् अभ्रमः—You walked तुम घूमे। अहम् अक्रन्दम्—I cried—मैं रोया। सोऽपतत् He fell वह गिरा। त्वं धर—You catch hold—तुम पकड़ो। सः न निन्देत्—He should not blame—उसे निन्दा न करनी चाहिये। अहं न निन्देयम्—I should not blame—मुझे निन्दा न करनी चाहिये।

आत्मनेपदम्

वर्त्तमान काल—Present tense

सः भाषते—He is speaking—वह कहता या बोलता है।

तौ भाषेते—They two are speaking—वे दोनों बोल रहे हैं।

ते भाषन्ते—They are speaking—वे सब बोलते हैं—वा बोल रहे हैं।

त्वम् भाषसे—You are speaking—तुम बोल रहे हो।

युवाम् भाषेथे—You two are speaking—तुम दोनों बोलते हो।

यूयम् भाषध्वे—You are speaking—तुम सब लोग बोल रहे हो।

अहम् भाषे—I am speaking—मैं बोल रहा हूँ।

आवाम् भाषावहे—We two are speaking—हम दोनों बोल रहे हैं।

वयम् भाषामहे—We are speaking—हम सब बोल रहे हैं।

भूत व अतीत काल—Past tense

सः अभाषत—He spoke—वह बोला।

तौ अभाषेताम्—They two spoke—वे दोनों बोले।

ते अभाषन्त—They spoke—वे सब बोले।

त्वम् अभाषथाः—You spoke—तुम बोले।

युवाम् अभाषेथाम्—You two spoke—तुम दोनों बोले।

यूयम् अभाषध्वम्—You spoke—तुम सब बोले ।

अहम् अभाषे—I spoke—मैं बोला ।

आवाम् अभाषावहि—We two spoke—हम दोनों बोले ।

वयम् अभाषामहि—We spoke—हम सब बोले ।

विधिलिङ्—Potential mood

सः भाषेत—He should speak—उसे बोलना चाहिये ।

तौ भाषेयाताम्—They two should speak—उन दोनों को बोलना चाहिये ।

ते भाषेरन्—They should speak—उन सबों को बोलना चाहिये (बहुवचन) ।

त्वम् भाषेथाः—You should speak—तुम्हें बोलना चाहिये ।

युवाम् भाषेयाथाम्—You two should speak—तुम दोनों को बोलना चाहिये ।

यूयम् भाषेध्वम्—You should speak—तुम सबों को बोलना चाहिये ।

अहम् भाषेय—I should speak—मुझे बोलना चाहिये ।

आवाम् भाषेवहि—We two should speak—हम दोनों को बोलना चाहिये ।

वयम् भाषेमहि—We should speak—हम सबों को बोलना चाहिये (बहुवचन) ।

Imperative—आज्ञा

सः भाषताम्—Let him speak—उसे बोलने दो।

तौ भाषेताम्—Let two of them speak—उन दोनों को बोलने दो।

ते भाषन्ताम्—Let them speak—उन सबों को बोलने दो (बहुवचन)।

त्वम् भाषस्व—You speak (Singular)—तुम बोलो (एक वचन)।

युवाम् भाषेथाम्—You two speak—तुम दोनो बोलो।

यूयम् भाषध्वम्—You speak(Plural)—तुम सब बोलो।

अहम् भाषै—Let me speak—मुझे बोलने दो।

आवाम् भाषावहै—Let two of us speak—हम दोनों को बोलने दो।

वयम् भाषामहै—Let us speak—हम सबों को बोलने दो (बहुवचन)।

भविष्यत् काल—Future tense

सः भाषिष्यते—He will speak—वह बोलेगा।

तौ भाषिष्येते—They two will speak—वे दोनों बोलेंगे।

ते भाषिष्यन्ते—They will speak—वे सब बोलेंगे।

त्वम् भाषिष्यसे—You will speak—तुम बोलोगे।

युवाम् भाषिष्येथे—You two will speak—तुम दोनों बोलोगे।

यूयम् भाषिष्यध्वे—You will speak—(Plural)—तुम सब बोलोगे।

अहम् भाषिष्ये—I shall speak—मैं बोलूँगा।

आवाम् भाषिष्यावहे—We two shall speak—हम दोनों बोलेंगे।

वयम् भाषिष्यामहे—We shall speak—हम सब बोलेंगे।

The following verbs are conjugated alike:—

निम्न लिखित धातुओं के रूप समान होते हैं :—

ईक्ष्—to look at देखना। क्षम्—to forgive माफ़ करना। ग्रस्—to eat खाना (swallow)। चेष्ट—to try कोशिश करना। त्रै—to protect रक्षा करना। त्वर्—to hasten जल्दी करना। द्युत्—to shine चमकना। प्याय्—to increase बढ़ना। बाध्—to thwart or to oppress रोकना। भिक्ष्—to beg भीख माँगना। मुद्—to rejoice प्रसन्न होना। यज्—to sacrifice (उभयपदी) पूजा करना। यत्—to try जतन करना। याच्—to beg भीख माँगना। रभ्—to begin शुरू करना। रम्—to sport खेलना। लभ्—to get पाना। लज्—to be ashamed शरमाना। लोक्—to see देखना। वन्द्—to adore नमस्कार करना। वृध्—to grow बढ़ना। वेप्—to tremble हिलना। शङ्क्—to be afraid डरना। शिक्ष्—to learn सीखना। सह्—to suffer सहना। हृ—to steal (उभयपदी) चोराना।

उदाहरण—

स लभते —He gains वह पाता है। अहं क्षमे—I forgive मैं क्षमा करता हूँ। त्वम् अचेष्ठथाः—You tried तुमने कोशिश की थी। The king protects—राजा रक्षति—राजा रक्षा करता है। स त्वरेत—

He should hasten उसको जल्दी करना चाहिये। स अभिक्षत—He begged उसने भीख माँगी। अहम् अमोदे—I rejoiced मैं प्रसन्न हुआ। त्वम् यतेथाः—You should try तुमको जतन करना चाहिये। अहं लज्जे—I am ashamed मैं लजाता हूँ। अहं वन्दे—I adore मैं प्रणाम करता हूँ। वृद्धो वेपते—The old man trembles बुड्ढा काँपता है। स शङ्कते—He is afraid वह डरता है। अहं शिक्षे—I learn मैं सीखता हूँ। तौ अहरेताम्—They two stole उन दोनों ने चोरी की।

प्रथमः पाठः

अश्वो धावति। रविरुदेति। फलं पतति। बालकः क्रन्दति। शिशुर्हसति। अग्निर्ज्वलति। गायको गायति। अहं पठामि। युवां गच्छथः। वयं पश्यामः। यूयम् उपविशत। बालकाः अधावन्। रामोऽहसत्।। यूयम् न क्रीडत। राजा रक्षतु। ब्राह्मणः पचेत्। त्वमपतः। हरिर्भ्रमति। आवां तिष्ठावः। ते अक्रन्दन्।

Supply appropriate nominatives to the following verbs:—

निम्नलिखित क्रियाओं में ठीक ठीक कर्त्ता जोड़ो:—

अपतम्, अहसम्, अहरम्, अशोचः, अपचः, अनिन्दः, अतिष्ठत् अपिबत्, अधरत्, हसामि, हस, अहसः, अगायः, अभवत्, अभ्रमम्, पठेत्, रक्षः, पश्यामि, पश्येत्।

विशेषणम्

In Sanskrit the adjective follows the noun in gender, number and case:——संस्कृत में विशेषण के लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्य के अनुसार ही होते हैं।

नीलं कमलम्—The blue lotus—नीला कमल ।
नीला गौः—The blue cow—नीली गौ ।
नीलः आकाशः—The blue sky—नीला आकाश ।
लोहितं कुसुमम्—The red flower—लाल फूल ।
लोहिता जवा—The red Jaba—लाल जवा ।
लोहितः मेघः—The red cloud—लाल बादल ।
शुभ्रम् वस्त्रम्—The white cloth—सफ़ेद कपड़ा ।
शुभ्रा मल्लिका—The white jasmine—सफ़ेद चमेली ।
शुभ्रः विहगः—The white bird—सफ़ेद चिड़िया ।

सुन्दराः शिशवः—The beautiful children—सुन्दर बालक ।

सुन्दर्य्यः बालिकाः—The beautiful girls—सुन्दर लड़कियाँ ।

सुन्दराणि नक्षत्राणि—The beautiful stars—सुन्दर तारे ।

क्षुधिताय ब्राह्मणाय—To a hungry Brahman—भूखे ब्राह्मण को ।

क्षुधितायै विधवायै—To a hungry widow—भूखी विधवा को ।

क्षुधितेभ्यः अपत्येभ्यः—To hungry sons—भूखे पुत्रों को ।

उल्लिखित उदाहरणों से विदित होता है कि, यहाँ पर समस्त शब्द प्रायः दो भागों में विभक्त हैं। जिस शब्द द्वारा किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध होता है, उसे विशेष्य पद कहते हैं—यथा, कमलम्, गौः, आकाशः, वस्त्रम्, पुस्तकम्, बालकः इत्यादि । जो विशेष्य के गुण तथा अवस्था का प्रकाश करता है, उसे विशेषण कहते हैं । यथा—नीलं (कमलम्), नीला (गौः); नीलः (आकाशः)

शुभ्रम् (वस्त्रम्), उत्तमं (पुस्तकम्), सुन्दरः (बालकः) इत्यादि। विशेषण पद प्रायः विशेष्य के पूर्व ही आदेश होता है। विशेष्य शब्द का जो लिङ्ग होता है विशेषण शब्द का भी वही लिङ्ग होता है। नीलं कमलम्, नीला गौः, नीलः आकाशः। इसी प्रकार विशेष्य पद की जो विभक्ति तथा जो वचन होता है, विशेषण पद की भी वही विभक्ति तथा वचन होता है। यथा—क्षुधिताय ब्राह्मणाय क्षुधितेभ्यः अपत्येभ्यः इत्यादि ही रूप होते हैं।

एकश्चन्द्रः—The single moon—एक चन्द्र। द्वौ पक्षौ—The two fortnights—दोनों पक्ष। त्रीणि नेत्राणि—The three eyes—तीनों नेत्र। चत्वारो वेदाः—The four Vedas—चारों वेद। पञ्च बाणाः—The five arrows—पाँचो बाण। षड् ऋतवः—The six seasons—छहों ऋतु। सप्त समुद्राः—The seven seas—सातों समुद्र। अष्टौ (अष्ट) वसवः—The eight Vasus—आठों वसु। नव ग्रहाः—The nine planets—नौ ग्रह। दश दिशः—The ten points——दशों दिशा।

Select appropriate nouns with each of the following adjectives:—

निम्न लिखित विशेषणों के विशेष्य चुनोः—

धार्म्मिकः, बुद्धिमती, पुण्यवान्, स्नेहमयी, पीतः, पीतम्, प्रियः, प्रिया, सुलभः, दुर्लभा, हितः, वेगवान्, वेगवती, नूतनः, पुरातनम्, विमलम्, विशुद्धः, दरिद्रा, धनवान्, एकः, एका, एकम्, त्रयः, तिस्रः, त्रीणि, चत्वारः and दश।

द्वितीयः पाठः

एष पुत्रः, एषा कन्या, एतत् पुस्तकम्, तत् दिनम्, तानि मित्राणि, सा धेनुः, यत् दानम्, यः सहायः, या विद्या, इदमन्नम्,

इमा आपः, इमे पशवः, अयम् कृष्णः, असौ गुरुः, अमी शिशवः, अदः सरोरुहम्, षट् रिपवः, सप्त वाराः, द्वादश मासाः, चत्वारो युगाः, बृहत् अभिधानम्, महान् तरुः, महती मतिः, महत् कुलम्, विद्वान् पुत्रः, विदुषी कन्या, विद्वत् मित्रम्, मधुरः उपदेशः, मधुरं पयः, जीर्णानि वासांसि, उदाराणि चरितानि, कनीयान् भ्राता, शून्याः दिशः, विपुलं धनम्, गुणहीनः जनः, श्रेष्ठा गतिः, द्वितीया कन्या, चतुर्थी तिथिः, मृन्मयी प्रतिमा, मृन्मयः घटः, मृन्मयं पात्रम् ।

Supply appropriate nouns or adjectives, as the case may be, to the following words :——निम्न लिखित शब्दों में विशेष्य अथवा विशेषण जोड़ो :—

विद्वान्, सती, हिरण्यमयः, व्याघ्रः, छात्रः, फलानि, आकाशम्, सलिलम्, बुद्धिः, शान्ता, एकादशी, कनीयसी, ज्येष्ठा, शिशवः, पशवः, जन्तवः, बन्धवः, हितकारी, शुभा, विशालः, पुण्यवान्, धार्म्मिकः, वश्यः and सत्यवादी ।

लट्—Present tense—वर्त्तमान.काल ।

रविस्तपति—The sun shines—सूर्य्य चमकता है ।

नरस्य हस्तौ भवतः—Man has two hands—मनुष्य के दो हाथ होते हैं ।

वृक्षाः श्यामला भवन्ति—Trees are green—वृक्ष हरे होते हैं ।

बालकाः कलरवमिच्छन्ति—Boys love noise—लड़कों को शोर पसन्द होता है ।

अहं गीतं शृणोमि—I hear a song—मैं गीत सुनता हूँ ।

ईश्वरोऽस्मान् रक्षति—God saves us—ईश्वर हमारी रक्षा करता है।

स पाठान् शिक्षते—He learns his lessons—वह अपना पाठ पढ़ता है।

तृतीयः पाठः

(परस्मैपदम्)	(आत्मनेपदम्)
विद्या ददाति विनयम्	विद्याहीना न शोभन्ते
लोभात् क्रोधः प्रभवति	नाकाले म्रियते जन्तुः
संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति	मूर्खाः सदा विवदन्ते
निःस्वो वष्टि शतम्	वृद्धो दुःखशतं भुङ्क्ते
धर्म्मो रक्षति धार्म्मिकम्	रामो वन्यानि भुङ्क्ते
राजा महीं भुनक्ति	समुद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः

Render into English and Hindi—अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद करोः—

अन्नं नः प्रधानं खाद्यं भवति। मम पादुके क्षुद्रे भवतः। मिथ्या-कथनं पापं भवति (To lie is a sin)। मार्जारा मत्स्यप्रिया भवन्ति (Cats are fond of fish) मृगस्य शृङ्गे भवतः। राम उत्तमो बालको भवति। अश्वस्य चत्वारः पादा भवन्ति। शिक्षको मह्यं क्रुध्यति।

Turn into Sanskrit—संस्कृत में अनुवाद करोः—

I am a poor boy. Ram is a rich man. It is morning. Hari goes to school every day. The cow is a mild animal. I have no cloth.

लोट्—Imperative mood—आज्ञा

शय्यायां शेष्व—Go to bed—सोने जाओ।

ममान्तिके उपविश—Sit by me—मेरे पास बैठो।

दुग्धं पिब—Drink the milk—दूध पिओ।

मम वस्त्रमानय—Bring my cloth—मेरे कपड़े लाओ।

तस्मै अन्नं देहि Give him some food—उसे अन्न दो।

सोऽत्र आगच्छतु—Let him come here—उसे यहाँ आने दो।

चतुर्थः पाठः

(परस्मैपदम्)	(आत्मनेपदम्)
दाता शतं जीवतु	विजयतामस्माकं सम्राट्
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य	गुरुषु विनयेन वर्त्तताम्
महाराज ! नमोऽस्तु ते	अन्नं प्रवर्द्धतां नित्यम्
नय मामपि काननम्	छात्रा नित्यमधीयताम्
प्रभो ! दृष्टिप्रसादं कुरु	न दत्स्व धनिने धनम्
शृणु मेऽवहितो वचः	ईश्वरे मन आधत्स्व

Render into English and Hindi—अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद करो:—

चौरं धर। त्वरां कुरु। वृथा समयं न यापय। मम पुस्तकं देहि। मम गृहमागच्छ। भिक्षुकाय अन्नं प्रयच्छ। मम क्रीडनकमानय।

परेषामुपकारं कुरु। शिक्षकस्य उपदेशं शृणु। आतपतापे न धाव। स गृहं गच्छतु। अहङ्कृतो मा भव।

Turn into Sanskrit—संस्कृत में अनुवाद करोः—

Let him come home. Do what I say. Do not play always. Obey your teachers. Drink the water. Be a good boy.

लङ्—Past tense—भूतकाल

ईश्वरः सर्व्ववस्तूनि असृजत्—God made all things—ईश्वर ने सब चीज़ों को बनाया।

वसुदेवस्य अष्ट पुत्रा अभवन्—Vasudeva had eight sons—वसुदेव के आठ पुत्र थे।

शिशुर्वृथा अक्रन्दत्—The child cried in vain—बच्चा व्यर्थ रोया।

अहमिदमकरवम्—I did it—उसे मैंने किया।

बालकः कूपे अपतत्—The boy fell into the well—लड़का कुएँ में गिर पड़ा।

अहं तं नापश्यम्—I did not see him—मैंने उसे नहीं देखा

पञ्चमः पाठः

(परस्मैपदम्)	(आत्मनेपदम्)
धृतराष्ट्रो जन्मान्ध आसीत्	रामोऽयोध्यायामजायत
परशुरामः पृथिवीं निःक्षत्रियामकरोत्	पञ्चाशत् [illegible] संग्रामेऽम्रियन्त
	दैत्यः प्राणभयेन महेशमुपास्त

पार्व्वती शिवं पतिमाप्तुमैच्छत्
स्त्रियो लाजान् व्यकिरन्
प्रह्लादो विष्णुमस्तवीत्
राजा आचार्य्यं वचनमब्रवीत्
निर्म्मले नभसि शशी व्यराजत
हरिर्बलिं वसुधामयाचत
रामरावणावयुध्येताम्
लोकविस्मयकारकम्

Render into English and Hindi—अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद करोः—

हरिर्दयालुः प्रभुरासीत्। मार्ज्जारो दुग्धमपिबत्। विद्यासागरो विद्यावानभवत्। स दयावानपि आसीत्। रजनी अन्धकारमयो अभवत्। बालिका उच्चैरहसत्। अहं पूर्णं चन्द्रमश्यम्। सर्व्वे लोकास्तमनिन्दन्।

Turn into Sanskrit——संस्कृत में अनुवाद करोः—

We saw the king. He did not hear my words. Two girls went there. Ram was a good boy. The child played all day long. The boy saw the moon.

लिट्—Past tense—भूतकाल

रघुः साहसिको राजा बभूव—Raghu was a brave king—रघु साहसी राजा थे।

रामस्य दयालुः पिता बभूव—Ram had a kind father—राम के पिता दयालु थे।

स भूमौ पपात—He fell down on the ground—वह पृथिवी पर गिर पड़ा।

रामो वनं जगाम—Ram went to the forest—राम वन को चले गये।

स वन्यानि बुभुजे—He ate wild fruits—उसने जंगली फल खाये।

कृष्णश्चाणूरं जघान—Krishna killed Chanur—कृष्ण ने चाणूर को मारा।

षष्ठः पाठः

(परस्मैपदम्)	(आत्मनेपदम्)
दितेःसुतो बालपाठ्यानि पपाठ	रेमे शरदि गोविन्दः
ववौ वायुः सुखस्पर्शः	रामः सीतामुपयेमे
दैत्यः पपात च ममार च	बुद्धस्तपस्तेपे सुदुःसहम्
हरिर्भूधरं दधार	राक्षसः सुमहत् वपुश्चक्रे
कुलीरको वक्रग्रीवां चकर्त्त	नृपस्य चत्वारः सुता जज्ञिरे
शुम्भो जगर्ज च ननर्त्त च	महिषी राजीवलोचनां कन्यां सुषुवे

Render into English and Hindi—अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद करो :—

पुरा दशरथो नाम राजा बभूव। तस्य चत्वारः पुत्रा बभूवुः। रामः ज्येष्ठः बभूव। स पितुर्वाक्यं शुश्राव। स पाठ्यानि सम्यक् पपाठ। स क्षुधिताय अन्नं ददौ। पिपासार्त्ताय च सलिलं ददौ।

Turn into Sanskrit—संस्कृत में अनुवाद करो :—

He asked me my name. Ram told you everything. He drank my milk. Madhu fell down from the tree. The boys went home. Did you do this ?

विधिलिङ्—Potential mood

राजा प्रजाः पालयेत्—The king should protect his subjects—राजा को प्रजा-पालन करना चाहिये।

स इदं कुर्य्यात्—He should do it—उसे यह करना चाहिये।

कदापि मिथ्या न वदेत्—One should never speak false words—झूठ कदापि न बोलना चाहिये।

न कदापि विवदेत—One should never quarrel—झगड़ा कदापि न करना चाहिये।

छात्रो गुरोरादेशं पालयेत्—The pupil should do what his teacher says—छात्र को गुरु की आज्ञा पालन करनी चाहिये।

न परुषं भाषेत—One should not speak rudely—कटुवचन न बोलना चाहिये।

सप्तमः पाठः

(परस्मैपदम्)

सदा सत्यं ब्रूयात्
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
क्रोधं यत्नेन परिहरेत्
यावज्जीवं जडो दहेत्
नेन्द्रियस्य वशमागच्छेत्
केनापि सह वैरं न कुर्य्यात्
न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य

(आत्मनेपदम्)

कायेन मनसा वाचा
मातापितरौ सेवेत
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत
पुरुषं परम्
सहसा विदधीत न क्रियाम्
वृत्यर्थं नातिचेष्टेत
नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम्

Render into English and Hindi—अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद करो :—

वयं कर्त्तव्यं कुर्य्याम। त्वं सर्वदा सुकर्म कुर्य्याः। स पाठकाले न हसेत्। अहं असतां सङ्गं त्यजेयम्। त्वमलसो न भवेः। बालकाः अमिणो भवेयुः। त्वं तत्र न गच्छेः। वयं तत्र न तिष्ठेम।

Turn into Sanskrit—संस्कृत में अनुवाद करो :—

We should not be idle. You should go to school every day. He should not go there. We should not see the sun. You should be kind to the poor. He should not say this.

लृट्—Future tense—भविष्यत् काल

अहं गृहं गमिष्यामि—I shall go home—मैं घर जाऊँगा।

सोऽत्रागमिष्यति—He will come here—वह यहाँ आवेगा।

स मां रक्षिष्यति—He will save me—वह मुझे बचावेगा।

अहं चन्द्रं द्रक्ष्यामि—I shall see the moon—मैं चन्द्रमा को देखूँगा।

श्वः अवकाशदिनं भविष्यति—To-morrow will be a holiday—कल छुट्टी होगी।

त्वं पितरौ सेविष्यसे—You will serve your parents—तुम अपने माता-पिता की सेवा करोगे।

अष्टमः पाठः

(परस्मैपदम्)	(आत्मनेपदम्)
अहं वक्ष्यामि ते हितम्	करिष्ये वचनं तव
अचिरेण शान्तिमुपैष्यसि	वेदानहमध्येष्ये
सदा गुरोर्वचनं श्रोष्यामि	परोपकारायाहं यतिष्ये
धर्म्मेण सुखमवाप्स्यसि	पुत्रो वा कन्या वा जनिष्यते तव
अहमुपहास्यतां गमिष्यामि	प्रावृषि सर्व्वाः सरितः
पापी पापफलेन विनङ्क्ष्यति	वर्द्धिष्यन्ते

Render into English and Hindi—अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद करो :—

वयं गृहं गमिष्यामः। त्वं किं करिष्यसि ? अहं विनयी भविष्यामि। वयं तत्र न स्थास्यामः। तव पुत्रः सुखी भविष्यति। वयं तत् न करिष्यामः। अहं चन्द्रं द्रक्ष्यामि। ते पश्चात् द्रक्ष्यन्ति।

Turn into Sanskrit—संस्कृत में अनुवाद करो :—

I shall stay here. We shall see the moon. They will see me. I shall take your gift. You will ask your teacher. I shall tell you a tale. Will you eat rice ?

उल्लिखित उदाहरणों से यह पता लगता है, कि क्रिया के भिन्न भिन्न काल होते हैं, उनमें से प्रधानतः, वर्त्तमान काल अथवा लट्, अनुज्ञा (आज्ञा) अथवा लोट्, अतीत (भूत) काल वा लङ् (लिट्); विधि अर्थात् औचित्य अथवा विधिलिङ् तथा भविष्यत् काल अथवा लृट् हैं, इनके अतिरिक्त संस्कृत में अन्यान्य काल होते हैं। वर्त्तमान समय में जो क्रिया सम्पादित होती

अथवा हो रही हो उसे बताने के लिये लट् वा वर्त्तमान काल का प्रयोग होता है। यथा—विद्या ददाति विनयम्—विद्या विनय को देती है (Learning yields modesty)। मम बन्धुरागच्छति—मेरा मित्र आता है। (My friend comes)। अस्ति लङ्का नाम पुरी—लङ्का नामक एक नगर है। (There is a city (named Lanka)। इत्यादि लट् अथवा वर्त्तमान काल के उदाहरण हैं। अनुज्ञा अनुरोध, प्रार्थना, आशीर्व्वाद, इत्यादि का भाव व्यक्त करने के लिये आज्ञा अथवा लोट् का प्रयोग होता है। यथा—दाता शतं जीवतु—दाता दीर्घायु हो (May a charitable man live long)। एतत् कार्य्यं कुरु—इस कार्य्य को करो (Do this work)। इह आगच्छ—यहाँ आओ (come here) इत्यादि। अतीत अथवा भूतकाल को समझाने के लिये धातु के लिये धातु के परे भूतकाल वा लङ् लिट् के भी प्रत्यय आदेश किये जाते हैं। यथा-कृष्णः कंसमहन् (जघान)—कृष्ण ने कंस को मारा। (Krishna killed Kansa)। रामो नाम राजा अभवत् (बभूव)—राम नाम के राजा थे (There was a king named Rama)। औचित्य के अर्थ में धातु के उत्तर विधिलिङ् होता है। यथा—सदा सत्यं ब्रूयात्—सदा सच बोलो—(One should always speak the truth)। परस्य द्रव्यं न हरेः—तुम्हें दूसरे की वस्तु न लेना चाहिये (You should not steal another's thing)। भविष्यत् के अर्थ में भविष्यत् काल का प्रयोग होता है। यथा—अहं वक्ष्यामि ते हितं—मैं तुम्हारे हित की ही कहूँगा। (I shall speak what is of good to you)। सः तत्र गमिष्यति—वह वहाँ जायगा—(He will go there)—इत्यादि। इनके अतिरिक्त उक्त उदाहरणों से यह भी प्रकट होता है कि प्रत्येक काल (लट्;

लोटादि) दो भागों में विभक्त हैं। प्रत्येक में से प्रथम भाग परस्मैपद तथा द्वितीय भाग आत्मनेपद है। जिस क्रिया का फल दूसरे का उद्देश्य-वाचक होता है उसमें परस्मैपद तथा जो क्रिया का फल निजोद्देश्य में अभिप्रेत होता है, उसमें आत्मनेपद का प्रयोग किया जाता है। यथा—अहं वक्ष्यामि ते हितम्—मैं तुम्हारे हित की कहूँगा। अहं वक्ष्ये ते हितम्—स्वयं अपने उपकार के लिये मैं तुम्हें हित की बात सुनाऊँगा।

करोतीति कर्त्ता—कर्त्तरि प्रथमा

[कर्तृ वाच्ये]

चन्द्र उदेति—The moon rises—चन्द्रोदय होता है।

वायुर्वाति—The wind blows—हवा चलती है।

मेघो गर्ज्जति—The cloud roars—बादल गर्जता है।

वृष्टिर्भवति—It rains—पानी बरसता है।

शिशुः क्रीडति—The child plays—बच्चा खेलता है।

बालिका हसति—The girl laughs—लड़की हँसती है।

वृद्धो निद्राति—The old man sleeps—बुड्ढा सोता है।

चौरः पलायते—The thief flies—चोर भागता है।

अत्र उपविश—Sit here—यहाँ बैठो।

न धाव—Do not run—दौड़ो मत।

नवमः पाठः

प्रातर्भवति। सूर्य्य उदेति। विहगाः कुलायेषु मधुरं कूजन्ति। कानने वन्यजन्तवः, जले मत्स्यादयः, स्थले मनुष्याः, पशवः, कीटाः,

पतङ्गाश्च प्रबुध्यन्ते । प्रबुद्धाः सर्व्वे स्वे स्वे कर्म्मणि प्रवर्त्तन्ते । बालकाः पाठेषु अवहिता भवन्ति । धेनवः गोचरेषु व्रजन्ति । कृषकाः कर्षणाय क्षेत्रं गच्छन्ति । प्रभाते सर्व्व एव जाग्रति । केवलम् अलसाः, पेचकाः, निशाचराश्च प्रातर्निद्रितास्तिष्ठन्ति ।

क्रियते यत् तत् कर्म्म; कर्म्मणि द्वितीया
[कर्त्तृ वाच्ये]

बालको ग्रन्थं पठति—The boy reads his book—बालक पुस्तक पढ़ता है ।

अहं चन्द्रं पश्यामि—I see the moon—मैं चन्द्रमा देखता हूँ ।

सदा सत्यं ब्रूहि—Always speak the truth—सदा सच बोलो ।

पुत्रः पितरं प्रणमति—The son bows down to his father—पुत्र पिता को प्रणाम करता है ।

राजा प्रजाः पालयति—The king governs his people—राजा प्रजापालन करता है ।

स गृहमागच्छति—He comes to his house—वह घर आता है ।

शिष्यो गुरुं पृच्छति—The student asks his teacher—शिष्य गुरु से पूछता है ।

मार्ज्जारी दुग्धं पिबति—The cat drinks the milk—बिल्ली दूध पीती है ।

दशमः पाठः

ईश्वरो विश्वमसृजत्। स सूर्य्यं, चन्द्रं, नक्षत्राणि अकरोत्। स मानवान्, पशून्, पक्षिणः, सरीसृपान्, मत्स्यान् सर्व्वान् जन्तूनरचत्। स स्थावरान् जङ्गमांश्च रचितवान्। सोऽन्नं, जलं, मम सर्व्वाणि भोग्यवस्तूनि कृतवान्। असौ सर्व्वान् प्राणिनः पश्यति, तेषां सुखासुखं विदधाति च। वयं तं नमामः॥

साधकतमं करणम्--तत्र तृतीया

गुरुर्दण्डेन ताडयति—The teacher beats with his stick—गुरु छड़ी से मारता है।

रामो बाणेन रावणं जघान—Ram killed Ravan with his arrow—राम ने रावण को बाण से मारा।

कायेन, मनसा वाचा मातापितरौ सेवेत—Man should serve his parents with his body, mind and word—मन, वचन और कर्म्म से माता पिता की सेवा करनी चाहिये।

श्रमेण कार्य्यं सिध्यति—Work succeeds by diligence—परिश्रम से कार्य्य सिद्ध होता है।

सत्येन रक्ष्यते धर्म्मः—Virtue is preserved by truth—सत्य से धर्म्म की रक्षा होती है।

धनेन बलवान् लोकः—Man becomes powerful by wealth—मनुष्य धन से बलवान् हो जाता है।

एकादशः पाठः

वयं चक्षुर्भ्यां पश्यामः कर्णाभ्यां शृणुमः, नासिकया जिघ्रामः, हस्ताभ्यां स्पृशामः पद्भ्यां च विचरामः। य एकेन नयनेन हीनः स काणः कथ्यते। द्वाभ्यां चक्षुर्भ्यां हीनः अन्ध उच्यते। अन्धेन किमपि द्रष्टुं न शक्यते। वयं मनसा चिन्तयामः, वाचा कथयामः कर्म्मेन्द्रियैश्च कर्म्माचरामः। वयं सत्कर्म्मणा सुखमनुभवामः असत्कर्म्मणा तु दुःखं विन्दामः। अतः असत्कर्म्मणः परिवर्त्तेन सत्-कर्मानुतिष्ठेम।

सम्प्रदीयते अस्मै इति सम्प्रदानम्
तत्र चतुर्थी

दरिद्राय धनं देहि—Give riches to the poor—दरिद्र को धन दो।

सर्व्वस्वं गुरवे दद्यात्—Man should give all his wealth to his preceptor—गुरु को सर्व्वस्व देना चाहिये।
मह्यं पुस्तकं देहि—Give me a book—मुझे पुस्तक दो।

राजा पुत्राय राज्यमयच्छत्—The king gave his kingdom to his son—राजा ने पुत्र को राज्य दिया।

नारायणाय पुष्पं ददामि—I give flower to Narayana—नारायण को मैं पुष्प देता हूँ।

अमेध्यं द्रव्यं न कस्मैचित् देयम्—Impure things should not be given to any one—अपवित्र पदार्थ किसी को न देना चाहिये।

दशरथः कैकेय्यै द्वौ वरौ ददौ—Dasharatha gave two boons to Kaikeyee—दशरथ ने कैकेयी को दो वर दिये ।

द्वादशः पाठः

दरिद्राय धनं दातव्यम् । क्षुधिताय अन्नं, पिपासार्त्ताय सलिलं, शीतार्त्ताय वस्त्रं, रोगिणे औषधं च देयम् । यो हि धनवान् स दीनाय प्रार्थिने धनं दद्यात् । अन्धाय, खञ्जाय, रोगिणे, अशक्ताय अन्नं, वस्त्रं, भेषजं, भैक्ष्यञ्च देयम् । शक्तिमान् अशक्ताय यथासाध्यं दद्यात् । सर्व्वशक्तिमान् ईश्वरः अस्मभ्यम् अन्नं, जलं, श्वासवायुं, सर्व्वमभिलषितं वस्तु यच्छति । अतोऽशक्तेभ्यो वयं यथाशक्ति अन्नादिकं यच्छेम । तेन परमेश्वरः प्रीतो न आकाङ्क्षाधिकं दास्यति ।

यतोऽपायोऽपादानम्—तत्र पञ्चमी

वृक्षात् पत्रं पतति—A leaf falls from the tree—वृक्ष से पत्ता गिरता है ।

विद्यालयादायाति मधुः—Madhu comes from school—मधू विद्यालय से आता है ।

शिशुर्व्याघ्राद्भीतः—The child is afraid of the tiger—बच्चा चीते से डर गया है ।

विपदस्त्रायते मित्रम्—Friend saves us from danger—मित्र हमें विपद् से बचाता है ।

लोभात् क्रोधः प्रजायते—Anger arises from avarice—लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है ।

नीचादप्युपदेशो ग्राह्यः—Advice even from a low-class man should be taken—नीच से भी उपदेश ग्रहण करना चाहिये।

त्रयोदशः पाठः

बालका गृहाद् विद्यालये आगताः पाठं शिक्षेरन् गुरोरुपदेशं पालयेयुश्च। वयं सर्पाद्बिभीमः, व्याघ्राद्बिभीमः, क्रूराच्च बिभीमः। एतेभ्यस्तु वयं कुकर्म्मणः बिभीयाम। यो हि कुकर्म्मणो भीतः, सत् कर्म्मण्यनुरक्तः स सदा क्षेममाप्नोति, विपदस्त्राणं लभते च। यो विपदस्त्रायते सोऽस्माकं बन्धुः। अतः सत्कर्म्म अस्माकं सर्व्वोत्तमो बन्धुः। सत्कर्म्मणः सर्व्वं सुखं सञ्जायते, असत्-कर्म्मणस्तु सर्व्वं दुःखं सम्भवति। वयम् असत्-कर्म्मणो विरता भवेम, सत्-कर्म्मणो न कदापि विचलेम।

स्वस्वामिभावादिः सम्बन्धः [शेषः]—तत्र षष्ठी

जगतां कारकः कृष्णः—Krishna is the maker of the Universe—कृष्ण संसार के कर्त्ता हैं।

नद्या सलिलं विमलम्—The water of the river is pure—नदी का जल निर्म्मल है।

प्रभोरादेशः पालनीयः—Master's command should be carried out—प्रभु की आज्ञा पालन करना चाहिये।

तव पुत्रो धीमान्—Your son is intelligent—तुम्हारा पुत्र बुद्धिमान् है।

चतुर्दशः पाठः

मनुष्यस्य द्वौ हस्तौ भवतः, तस्य द्वौ पादौ, द्वे नेत्रे, द्वौ कर्णौ एका नासिका, एका रसज्ञा च भवति। गवां, मेषाणां, महिषाणां, व्याघ्राणां च चत्वारः पादा भवन्ति, तेषां हस्तो नास्ति। पक्षिणामपि हस्तौ न विद्येते, तेषां द्वौ पादौ भवतः, हस्तविनिमयेन तेषां पक्षौ विद्येते। केषाञ्चित् प्राणिनां पादा न सन्ति, तान् सरीसृपान् कथयामः। मत्स्यानामपि हस्तौ वा चरणौ वा न विद्येते। तेषां पक्षौ पुच्छञ्च विद्यन्ते। अस्माकम् सर्व्वाणि अङ्गानि विद्यन्ते।

आधारोऽधिकरणम्—तत्र सप्तमी

कलशे जलमस्ति—There is water in the pitcher—**घड़े में जल है।**

शिशुः शय्यायां शेते—The child lies on the bed—**बच्चा बिछौने पर सोया है।**

सिंहो वने वसति—The lion lives in the wood—**सिंह वन में रहता है।**

गङ्गायां घोषो वसति—Mr. Ghosh lives near the Ganges—**घोष बाबू गङ्गा किनारे रहते हैं।**

दुग्धे माधुर्यमस्ति—There is sweetness in milk—**दूध में मिठास है।**

अध्ययने तस्यानुरागो विद्यते—He has passion for study—पढ़ने में (पर) उसका प्रेम है।

रात्रौ चन्द्र उदेति--The moon rises in the ~~Might~~ night—रात्रि में चन्द्रोदय होता है।

पञ्चदशः पाठः

ये स्थले वसन्ति ते स्थलचराः, ये जले वसन्ति ते जलचराः, ये स्थले जले उभयत्र वसन्ति ते उभचराः, ये आकाशे उड्डीयन्ते ते आकाशचराः। स्थलचरा जले वस्तुं न शक्नुवन्ति, जलचरा अपि स्थले वस्तुं न शक्नुवन्ति। मनुष्यास्तु स्थले वसन्ति, तरणीमधिष्ठाय जले तिष्ठन्ति, विमानमवस्थाय च आकाशे गच्छन्ति।

केचित् प्राणिनः दिवाभागे न पश्यन्ति, केऽपि निशायां दृष्टिहीनाः, केचित् दिवा तथा निशायां तुल्यदृष्टयः, केऽपि पुनः दिवसे तथा निशायां नावलोकयन्ति। दर्शने सर्व्वेषां प्राणिनामभिलाषोऽस्ति।

उपर्य्युक्त पाठों से विदित होता है कि दो अथवा बहुपद सन्निविष्ट होने से मन का सम्पूर्ण भाव प्रकाश होने पर एक वाक्य की रचना होती है। यथा—अहं गृहं गमिष्यामि—मैं घर जाऊँगा (I shall go home)। वाक्य मात्र ही में प्रायः क्रिया की आवश्यकता पड़ती है। रामो हसति—राम हँसता है (Rama laughs)। वाक्य में हसति क्रिया है। क्रिया के सम्पादन में जो सहायता करता है, उसे कारक कहते हैं। यथा—दान क्रिया सम्पादनार्थ, दाता, ग्रहीता, धन, तीर्थादि स्थान, हस्तादि साधन (दाता के) तथा कोषादि पात्र इत्यादि प्रत्येक की सहायता

पहुँचती है, अतः इनमें से प्रत्येक कारक है। संस्कृत में छः कारक होते हैं—कर्ता, कर्म्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण।

जो क्रिया का सम्पादन करता है वह कर्त्ता कहा जाता है, यथा— रामः ददाति, राम देता है (Rama gives)। इस वाक्य में राम क्रिया का सम्पादक है, अतः राम कर्त्तृ कारक है। और राम शब्द के पश्चात् प्रथमा विभक्ति निर्द्दिष्ट हुई है। इसी प्रकार जो किया जाता है, कहा जाता है, दिया जाता है, उसे कर्म्म कारक कहते हैं, यथा—धनं ददाति—धन देता है (Gives riches), इस वाक्य में धनं कर्म्म कारक है, अतः धन में द्वितीया विभक्ति लगाई गई है। क्रिया-सम्पादन के प्रधान उपाय को करण कहते हैं। जिसके द्वारा क्रिया निष्पन्न होती है, वह करण कारक होता है। यथा— हस्तेन ददाति—हाथ से (द्वारा) देता है (Gives with hand)। इस वाक्य में दान क्रिया सम्पादन का प्रधान उपाय हस्त है। हस्त न रहने पर किस के द्वारा दान होगा ? हस्त द्वारा ही दान होता है, अतः हस्त करण कारक है, और हस्त में तृतीया विभक्ति लगी है। दानपात्र—सम्प्रदान कारक होता है, अर्थात् जिसे कोई भी वस्तु दान दी जाती है, वह सम्प्रदान कारक होता है। यथा— ब्राह्मणाय ददाति—ब्राह्मण को देता है (Gives to a Brahman), ब्राह्मण को दान देता है; इस वाक्य में ब्राह्मण दानपात्र है, अतः ब्राह्मण सम्प्रदान कारक है और ब्राह्मण में चतुर्थी विभक्ति आदेश हुई है। जिससे कोई पदार्थ पृथक् होता है, उसे अपादान कहते हैं जो कुछ पृथक् होता है, वह कर्त्ता होता है। यथा—कोषात् ददाति—कोष में से देता है (Gives from the bag)। यहाँ कोष अपादान कारक है, अतः कोष में पञ्चमी विभक्ति लगाई गई है। क्रिया के आधार; अर्थात् जिस स्थान पर क्रिया सम्पादित होती

है, उसका नाम अधिकरण कारक है। यथा—तीर्थे ददाति—तीर्थ में (पर) देता है। (Gives in a sacred place) तीर्थ में (पर) दान क्रिया सम्पादित होती है; अतः तीर्थ अधिकरण कारक है। तीर्थ में सप्तमी विभक्ति लगी है। समस्त पद इत्यादि सम्मिलित होकर रामः तीर्थे कोषात् करेण ब्राह्मणाय धनं ददाति—राम तीर्थ पर कोष में से हाथ द्वारा ब्राह्मण को धन देता है—(Rama gives riches to a Brahman from his bag with his hand in a sacred place) इस वाक्य में समस्त कारक प्रदर्शित हो गये हैं। इसके अतिरिक्त सम्बन्ध विदित होने पर (अवशिष्ट) षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—रामस्य धनम्—राम का धन। (Rama's riches) यहाँ रामस्य षष्ठी विभक्ति है।

अतएव कारक मात्र का ही क्रिया के सहित सम्बन्ध रहता है। रामः ददाति। यहाँ ददाति क्रिया के सङ्ग 'राम' शब्द का सम्बन्ध है—कौन देता है? राम देता है। धनं ददाति। इसमें 'ददाति' क्रिया के साथ धन का सम्बन्ध है। क्या देता है? धन देता है। हस्तेन ददाति। क्रिया 'ददाति' के सहित हस्त का सम्बन्ध है। किसके द्वारा देता है? हस्त द्वारा देता है। ब्राह्मणाय ददाति। यहाँ भी क्रिया ददाति से ब्राह्मण का सम्बन्ध है। किस को देता है? ब्राह्मण को देता है। कोषात् ददाति। क्रिया ददाति के सहित कोष का सम्बन्ध है। कहाँ से देता है? कोष में से देता है? तीर्थे ददाति। क्रिया ददाति के साथ तीर्थ का सम्बन्ध है। कहाँ पर देता है? तीर्थ में (पर) देता है। इन समस्त कारकों का ही क्रिया के साथ अन्वय (सम्बन्ध) है। अतएव क्रिया के सहित अन्वय रहने ही से इन्हें कारक कहते हैं। किन्तु रामस्य धनम्—राम का धन कहने से क्रिया के सहित राम का कोई अन्वय अथवा सम्बन्ध न रहने के कारण 'रामस्य' कारक

नहीं है, केवल पद मात्र है। 'रामस्य' यह सम्बन्ध पद है। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। इसी प्रकार 'नरः' कहने से केवल एक ही मनुष्य कर्त्ता; अर्थात् (कुछ काम करता है) समझ में आता है, नरौ कहने से दो मनुष्य कर्त्ता विदित होते हैं, एवं नराः कहने से दो से अधिक मनुष्य कर्त्ता मालूम पड़ते हैं, (A man does, two men do, men do) अर्थात् एक मनुष्य करता है, दो मनुष्य करते हैं, मनुष्य करते हैं। 'नरम्' कहने से एक मनुष्य को (कहता है, देखता है, इत्यादि) कर्म्म मालूम पड़ता है, 'नरौ' कहने से दो मनुष्य कर्म्म एवं 'नरान्' कहने से दो से अधिक मनुष्य कर्म्म कारक में विदित होते हैं, (Sees) a man, (Sees) two men, (Sees) men; अर्थात् एक मनुष्य को (देखता है), दो मनुष्यों को (देखता है), मनुष्यों को (देखता है)। 'नरेण, नराभ्याम् नरैः'; कहने से एक, दो अथवा दो से अधिक मनुष्यों द्वारा निष्पादित होना ही विदित होता है (करण कारक) By a man, by two men, by men अर्थात् एक मनुष्य से (द्वारा), दो मनुष्यों से (द्वारा), और मनुष्यों से (द्वारा) होना विदित होता है। नराय, नराभ्यां नरेभ्यः'; कहने से एक दो वा उनसे अधिक मनुष्यों को दान देता है (सम्प्रदान कारक) समझ में आता है—Gives (to) a man, gives (to) two men, gives (to) men—अर्थात् एक मनुष्य (को) देता है, दो मनुष्यों (को) देता हैं; मनुष्यों (को) देता है। नरात्, नराभ्याम्, नरेभ्यः'; कहने से एक, दो अथवा उनसे अधिक मनुष्यों से गृहीत, भीत, उत्पन्न इत्यादि (अपादान कारक) मालूम पड़ता है—From a man, from two men, from men—अर्थात् एक मनुष्य से, दो मनुष्यों से, मनुष्यों से डरा अथवा उत्पन्न हुआ मालूम पड़ता है। नरस्य, नरयोः नराणाम्'; कहने से एक मनुष्य का, दो मनुष्यों

का अथवा उनसे अधिक मनुष्यों का (सम्बन्ध पद) प्रतीत होता है। Of a man, of two men, of men—अर्थात् एक मनुष्य का, दो मनुष्यों का एवं मनुष्यों का होना ही मालूम पड़ता है। 'नरे नरयोः नरेषु; कहने से एक मनुष्य में, दो मनुष्यों में अथवा उनसे अधिक मनुष्यों में अवस्थित (आधार—अधिकरण) विदित होता है। In a man, in two men, in men. प्रत्येक कारक ही में इसी प्रकार उल्लिखित एक एक विभक्ति तथा हर एक विभक्ति में तीन तीन वचन प्रयुक्त होते हैं। ६ अगस्त १९३५

षोड़शः पाठः

प्रातरिदम्। सूर्यः शीघ्रमुदेष्यति। शीतलः खलु समीरणः। एष हि अनुत्तमो भ्रमणसमयः। यदि वयं प्रातर्भ्रमेम तदा स्वास्थ्यं लप्स्यामहे। सूर्योदयात् प्राक् वयमवश्यं शय्याया उत्तिष्ठेम। तृणोपरि न विचर। यतस्तानि शिशिरसिक्तानि भवन्ति। तृणोपरि शिशिरविन्दवः कीदृशं उज्ज्वला दृश्यन्ते। वृक्षोपरि विहगाः कीदृशं मधुरं गायन्ति। पूर्वस्यां दिशि कीदृशाः सुन्दरा वर्णा दृश्यन्ते। सूर्यस्तत्र उदेष्यति।

सप्तदशः पाठः

कोशलराजस्य दशरथस्य अयोध्या राजधानी आसीत्। रामः, लक्ष्मणः, भरतः, शत्रुघ्न इति नाम तस्य चत्वारः पुत्रा आसन्। तेषां ज्येष्ठो रामो धार्मिकः, सत्यनिष्ठः, साहसिकश्च अभवत्। स सुन्दरीं राजकन्यां सीतामुपयेमे। राजा तं यौवराज्ये अभिषेक्तुं

मैच्छत्। तस्य विमाता कैकेयी तु स्वपुत्राय भरताय राज्यं दत्वा तं निर्व्वासयामास। रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह चतुर्दश-वर्षाणि वनमगच्छत्।

अष्टादशः पाठः

मालवदेशे विष्णुशर्म्मा नाम ब्राह्मणः अवसत्। तस्य गोविन्दः कृष्णश्चेति द्वौ पुत्रौ आस्ताम्। तयोर्ज्यायान् गोविन्दो न कामपि विद्यामधीतवान्। कृष्णस्तु विद्यासु कुशलो बभूव। विष्णुशर्म्मा चरमे वयसि सकलमपि स्वस्य धनं गोविन्दाय ददौ। कृष्णाय तु न किमपि दत्तवान्। कतिपयेषु वर्षेषु गतेषु गोविन्दस्य बहवः कुटुम्बा बभूवुः। स कुटुम्बभरणे स्वस्य धनं दिने दिने व्ययितवान्। विद्याहीनत्वात् किञ्चिदपि उपार्ज्जयितुं न शशाक। तेन दुर्गतोऽभवत्। कृष्णस्तु विद्याया बहुद्रव्यमर्ज्जयित्वा धनिकोऽभवत्।

१३ अगस्त १९३१

ऊनविंशः पाठः

सायमिदम्। अधुनैव रविरस्तं गतः। शीतलो हि समीरणः। नीले नभसि मेघो नास्ति। गावः कोमलतृणोपरि शेरते रोमन्थायन्ते च। मल्लिकासंस्तरात् सौरभमायाति। प्रफुल्लविहगकुलानि घनारण्यमुड्डीय गच्छन्ति। शस्यानि नवानि श्यामलानि च दृश्यन्ते। चञ्चलैका मक्षिका मदन्तिके गुञ्जति। समाप्तस्तस्या दिवसीयो गुरुश्रमः। शोभनं मधुचक्रं प्रतियाति सा। अन्धकार उपजायते। उज्ज्वलकुमुदपतिः तारकाश्च शीघ्रमुदेष्यन्ति अस्मभ्यम् आलोकं दास्यन्ति। १८ अगस्त १९३१

विंशः पाठः

पुरा धाराराज्ये भोजो नाम भूपतिः चिरं प्रजाः पर्य्यपालयत्। स राजा विद्वत्-प्रियः वदान्यशिरोमणिरिति ख्यातिमगच्छत्। एकदा राजमार्गे विहरन् स कमपि विप्रं ददर्श। तस्य हस्ते चर्म्ममयं कमण्डलुं दृष्ट्वा तञ्च दरिद्रं ज्ञात्वा राजा आह। विप्र! चर्म्मपात्रं किमर्थं पाणौ वहसि इति। स च विप्रः मुखशोभया तं भोजं विचार्य्याह। देव! दातॄणां शिरोमणौ भोजे पृथिवीं शासति लौहस्य ताम्रस्य च अभावोऽभवत्। तेन चर्म्ममयं पात्रं वहामि। इति। राजाह। भोजे शासति लौहताम्राभावे को हेतुः? तदा विप्र आह।

अस्य श्रीभोजराजस्य द्वयमेव सुदुर्लभम्।
शत्रूणां शृङ्खलैर्लौहं ताम्रं शासनपत्रकैः॥

ततस्तुष्टो राजा तस्मै प्रत्यूत्तरं लक्षं ददौ। २३ अगस्त १९३१

एकविंशः पाठः

पदार्थः

जगति चेतनः अचेतनश्च द्विविधौ पदार्थौ भवतः। चेतनया युक्तः सर्व्वः पदार्थः चेतनः कथ्यते, तथा चेतनया शून्यो जडः अचेतनो वा कथ्यते। नरः, पशवः, पक्षिणश्च चेतनाः। काष्ठं पुस्तकं गृहमचेतनम्। चेतनः पदार्थः पुनः जीवः कथ्यते। जीवाश्चतुर्धा विभक्ताः। जरायुजाः, अण्डजाः, स्वेदजाः, उद्भिजाश्च।

ये जरायुभ्यः सम्भवन्ति ते जरायुजाः। मनुष्याः, वानराः, गावः, अश्वाः, व्याघ्राः, सिंहाः, पशवश्च सर्व्वे जरायुजा भवन्ति।

ये अण्डेभ्यो जायन्ते ते अण्डजाः। पक्षिणः सरीसृपाः मत्स्याश्च अण्डजा भवन्ति।

ये स्वेदेभ्यो जायन्ते ते स्वेदजाः। दंशाः, मशकाः, केऽपि कीटाः, पतङ्गा अपि स्वेदजा भवन्ति।

ये भूमिम् उद्भिद्य जायन्ते ते उद्भिज्जाः। वृक्षाः, तृणानि, गुल्माः, वल्ल्यः, लताश्च सर्व्वा उद्भिज्जा भवन्ति।

चेतना जीवा निर्द्दिष्टं कालं जीवित्वा अन्ते म्रियन्ते। ते सुखं दुःखञ्च अनुभवन्ति। अचेतनाः पदार्था पुनर्न जीवन्ति न म्रियन्ते वा। ते सुखदुःखमपि नानुभवन्ति।

सर्व्वेषु जीवेषु मनुष्याः श्रेष्ठाः। ते धर्म्मेण विवेकेनापि युक्ताः। विवेकस्य बलेन ते हितम् अहितञ्च निरूपयन्ति, हितमाचरन्ति च। इतरे जीवाः सम्यक् हितं नाचरन्ति। तेषां धर्म्मस्य ज्ञानमपि नास्ति। २८ अगस्त १९३१

[illegible]विंशः पाठः

शरीरम्—इन्द्रियाणि

अस्माकं देहे उत्तमाङ्गं शिरः। शिरसि असंख्याः केशाः सन्ति। केशानामधः ललाटं ततो भ्रुवौ ततश्चक्षुषी। चक्षुषोर्मध्ये कनीनिका तारकेति वा भवति। सा तारका सर्व्वेषां वस्तूनां रूपं गृह्णाति, तेन चक्षुषी दर्शनेन्द्रियं कथ्यते। नेत्रयोरुपरिभागे नेत्रयोरावरके पक्ष्मणी नेत्रच्छदौ वा भवतः। नेत्रयोर्मध्यात् मुखस्योपरि नासिका वर्त्तते। वयं नासिकया जिघ्रामः, तेनासौ घ्राणस्येन्द्रियं कथ्यते। नासिकाया अधोदेशे रन्ध्रे विद्येते। ताभ्यां

श्वासस्य वायुश्चलति। नासिकाया अधः ओष्ठः, ओष्ठस्याधः अधरस्तिष्ठति। एतयोर्मध्ये मुखविवरम् अस्ति। मुखविवरे, उपरि अधश्च दन्तानां पङ्क्ती विद्येते। अभ्यन्तरे जिह्वा, सा रसना रसज्ञा वापि कथ्यते। वयं रसनया आहार्य्याणामास्वादम् अनुभवामः। तेन जिह्वा रसनेन्द्रियं कथ्यते। नेत्रयोरुभयोः प्रान्तयोः कर्णौ विद्येते। एतौ हि शब्दस्य ग्रहणं कुरुतः। तेनैतौ श्रवणस्य इन्द्रियं कथ्यते। कर्णयोरधः कपोलौ विद्येते। एतत् सर्व्वं हि मुखमण्डलं भवति।

मुखमण्डलस्याधः ग्रीवा। तस्या अधः स्कन्धौ। स्कन्धयोर्मूले हस्तौ तयोर्मूले च कक्षौ भवतः। कक्षयोरधः पार्श्वौ, तयोरभ्यन्तरे वक्षःस्थलम्। वक्षसः पश्चात् पृष्ठम्, अधश्च उदरम्। तस्याधः कटिः, ततः ऊरू, ततः, क्रमात् जानु, जङ्घा, पदम् विद्यते।

हस्तयोः पादयोश्च अङ्गुल्यः सन्ति, तेषु नखा विद्यन्ते। समग्रं शरीरं त्वचा परिवृतमस्ति। त्वचा अस्माकं स्पर्शज्ञानं भवति। तेन त्वक् स्पर्शस्येन्द्रियं कथ्यते। ७ सितम्बर १९३१

त्रयोविंशः पाठः

षड् ऋतवः

१—ज्येष्ठो आषाढश्च निदाघसमयः। इह हि रवेस्तेजः प्रखरतामायाति। दिवसा दीर्घतरा भवन्ति निशाश्च क्षुद्रतरा जायन्ते। इह क्षुद्रा नद्यः, क्षुद्रा जलाशयाश्च शुष्कजला भवन्ति। सर्व्वे प्राणिनः पिपासया भृशं पीडिता भवन्ति। मानवास्तापभयेन मध्याह्नकाले गृहे निरुद्धास्तिष्ठन्ति।

२—श्रावणभाद्रौ वर्षासमयः। इह हि निरन्तरं वृष्टिवारीणि पतन्ति, गर्ज्जन्ति च पयोदाः। हंसाः सारसाः, शिखिनश्च हर्षेण नृत्यन्ति मधुरं गायन्ति च। मानवा अपि वर्षाजलेन स्निग्धाः प्रफुल्लाश्च भवन्ति। कृषकाः क्षेत्रेषु हलचालनं कुर्व्वन्ति। तेन क्षेत्राणि शालिप्ररोहैः श्यामलानि दृश्यन्ते।

३—आश्विनकार्त्तिकौ शरत्समयः। इह हि आकाशं विमलं भवति। सरितः जलाशयाश्च स्वच्छजला भवन्ति। क्षेत्राणि नव-शस्योद्गमैः हरितानि दृश्यन्ते। काननेऽपि नव कुसुमानि विकाशन्ते। शरदि निरन्तरं मृदु समीरो वहति। निशायां पुनः अभ्रमुक्तं गगनं ज्योत्स्नया फुल्लतरं दृश्यते।

४—मार्गशीर्ष-पौषौ हेमन्तसमयः। इह हि निशायां हिमपातेन जगत् शीतलं भवति। हेमन्ते शालि-धान्यानि परिणतानि भवन्ति।

५—माघ-फाल्गुनौ शिशिरसमयः। इह हि सर्व्वे जीवाः शीतेन सङ्कुचिता भवन्ति। दिवसाः पुनः ह्रस्वाः निशाश्च दीर्घतरा भवन्ति। तेन प्राणिनः समधिकं क्लेशमनुभवन्ति।

६—चैत्रवैशाखौ वसन्तसमयः। इह हि सर्व्वे जीवाः फुल्लतरा भवन्ति। वसन्ते तरुभ्यः लताभ्यश्चः नवपत्र--किशलयानि जायन्ते। कानने कुसुमानि विकशितानि भवन्ति। विहगाः शाखि-शाखासु मधुरं कूजन्ति। वनात् वनान्तरमुड्डीय गच्छन्ति। पतङ्गाश्च पुष्पेषु मधुरं गुञ्जन्ति। इह हि सुमधुरः समीरणः कुसुमगन्धं संहृत्य समन्तात् वाति। तद्घ्राणेन मानवा हर्षनिर्भरा भवन्ति।

२१ सितम्बर १९३१

चतुर्विंशः पाठः

संलापः—Dialogue.

पिता—प्रातर्यो रविः पूर्व्वस्यां दिशि उदेति तस्य कीदृश आकारः ?

पुत्रः—यादृशमहं पश्यामि तादृशस्तस्य क्षुद्र आकारः।

पिता—नहि वत्स ! स भूमण्डलादपि बृहत्तरः।

पुत्रः—तत् किमहं तं क्षुद्रतरम् अवलोकयामि।

पिता—स बहुदूरे तिष्ठति तेन स क्षुद्रो दृश्यते। त्वम् अस्मात् स्थानात् क्षेत्रे विचरन्तीं धेनुं कीदृशीं क्षुद्रां पश्यसि। पश्य ! तरौ स्थितं विहगं कीदृशं क्षुद्रं विलोकयसि। सूर्य्यः पृथिव्या महति दूरे वर्त्तते। तेन वयं तं क्षुद्रतरं विलोकयामः।

पुत्रः—कथं स नियतम् आकाशे न तिष्ठति ? सायं कथमसौ अस्तं याति ?

पिता—सर्व्वं दिनं सोऽस्मभ्यम् आलोकम् उत्तापञ्च ददाति तेन वयं स्वेषां कर्म्माचरामः। आलोकस्य साहाय्येन वयं श्रमं कृत्वा जीविकाम् अर्ज्जयामः। वयं सर्वं दिनं श्रमे निरताः दिनस्य शेषे श्रमे अशक्ताः विमुखाश्च भवामः तदा विश्राममु लब्धुं व्याकुलिता भवामः। ईश्वरः अस्माकं निद्राया आनुकूल्येन रात्रौ सवितारम् अपसारयति। आलोकस्य परिवर्त्तेन अन्धकारं विदधाति च। तेन वयं सुखेन निद्रामः।

पुत्रः—ईश्वरः कीदृशो दयालुर्भवति। २८ सितम्बर १९३१

पञ्चविंशः पाठः

संलापः—Dialogue.

कदाचित् वृक एको जलं पातुं काञ्चित् नदीमुपागतः। सोऽदूरे एकं मेषशिशुं सलिलं पिबन्तमपश्यत्। वृकश्चिन्तयामास। पुष्टदेहोऽयं मेषार्भकः। एष मे पुष्कल आहारो भविष्यति। अतश्छलेन एनं हन्मि। ततः स मेषशिशुमुवाच।

वृकः—रे दुष्ट मेषशिशो! मम पानीयं जलम् आविलं कर्त्तुं किं नाम ते साहसम्?

मेषशिशुः—नहि वृकभद्र! नह्येतत् सम्भवति। जलं भवतो मदन्तिके अधः प्रवहति। अतोऽहं तव पानीयं जलम् आविलं कर्त्तुमशक्तः।

वृकः—आस्तां तावत्। पूर्व्वे वर्षे त्वं मे निन्दां कृतवान्। अतस्त्वां दण्डयामि।

मेषशिशुः—नहि स्वामिन्! नाहं कदापि ते निन्दामकरवम्। एषा ते भ्रान्तिः। पूर्व्ववर्षे नाहमजाये। अतः कथं त्वामनिन्दम्।

वृकः—भवतु। यदि भवान्न सा ते माता। अतस्त्वामहं खादामि।

ततः स वृको निरपराधं मेषशिशुं धृतवान् खादितवांश्च। अतो वयं लक्षयामः, दुर्वृत्तः अपकर्त्तुमभिलषन् लीलयामिषमुद्भावयति। ५ अक्तूबर १९३१

उल्लिखित पाठों से यह विदित होता है कि निमित्तार्थ अथवा इच्छार्थ धातुओं के संयोग से धातु के उत्तर (पश्चात्) 'तुम्' प्रत्यय आदेश होता है। यथा—स्नातुम् गच्छति—स्नान करने के निमित्त जाता है। भोक्तुम् इच्छति—अर्थात् भोजन करने के लिये अथवा भोजन करने के निमित्त इच्छा करता है। अपकर्त्तुमिच्छन् लीलया मिषम् उद्भावयति—अर्थात् दुरात्मा अपकार करने की इच्छा करके (अपकार करने के निमित्त इच्छा करके) अनायास ही छल की उद्भावना करता है। किन्तु उभय क्रिया का कर्त्ता एक ही होगा। व्याघ्रः जलं पातुं नदीमुपागतः—व्याघ्र जल पान करने के निमित्त नदी पर गया, इत्यादि। इस स्थान पर पान करने का कर्त्ता तथा जाने का कर्त्ता एक ही है, अर्थात् जो पान करेगा, वही गया है। एक कर्त्ता न होने पर 'तुम्' नहीं होता है किन्तु "शतृ" प्रत्यय का आदेश होता है। यथा—स तत्र एकम्मेषशिशुं सलिलम्पिबन्तमपश्यत्। इस स्थान पर 'पातुम्' नहीं हुआ; कारण—देखा तो व्याघ्र ने और जल पान करता था मेष का बच्चा—पृथक् कर्त्ता हुआ। शतृ प्रत्ययान्त पद विशेषण होता है; यथा—स हसन् उवाच। केवल दो क्रिया हैं। एक ही समय में सम्पन्न होने पर शतृ प्रत्यय आदेश होता है तथा पूर्वकालिक धातु के पश्चात् 'तुम' प्रत्यय लगाया जाता है।

नीतिसंग्रहः

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्म्मं ततः सुखम् ॥
एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥
वाति गन्धः सुमनसां प्रतिवातं कथञ्चन ।
धर्म्मजस्तु मनुष्याणां वाति गन्धः समन्ततः ॥
त्यज दुर्ज्जनसंसर्गं भज साधुसमागमम् ।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नित्यमनित्यताम् ॥
अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
लोभात् क्रोधः प्रभवति क्रोधाद् द्रोहः प्रवर्त्तते ।
द्रोहेण नरकं याति शास्त्रज्ञोऽपि विचक्षणः ॥
शतं दद्यान्न विवदेतेति विज्ञस्य सम्मतम् ।
विना हेतुमपि द्वन्द्वमिति मूर्खस्य लक्षणम् ॥
परोऽपि हितवान् बन्धुः बन्धुरप्यहितः परः ।
अहितो देहजो व्याधिर्हितमारण्यमौषधम् ॥

१२ अक्टूबर १९३१

व्याकरणम्

वर्ण-निर्णय

१—अ, इ, उ, क ख ग इत्यादि प्रत्येक अक्षर को वर्ण कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं; स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर वर्ण (Vowels)

२—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ इन तेरह वर्णों को स्वर कहते हैं। स्वर दो प्रकार के होते हैं; ह्रस्व तथा दीर्घ। अ इ उ ऋ ऌ ये पाँचों ह्रस्व स्वर हैं। आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ ये आठों दीर्घ स्वर हैं। ऌकार का दीर्घ प्रयोग नहीं होता।

व्यञ्जन वर्ण (Consonants)

३—क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह, ं (अनुस्वार) तथा ः (विसर्ग) ये पैंतीस व्यञ्जन वर्ण हैं* इनमें से क से लेकर म पर्यन्त पच्चीस वर्णों को स्पर्श वर्ण कहते हैं† समस्त स्पर्श वर्ण पाँच वर्गों में विभक्त हैं। क ख ग घ ङ इन पाँचों को कवर्ग कहते हैं। च छ ज झ ञ इन पाँचों को चवर्ग कहते हैं। ट ठ ड ढ ण इन

---

*समस्त व्यञ्जन वर्णों का स्वर की सहायता बिना स्वयं उच्चारण नहीं हो सकता। इनका उच्चारण करने के लिये इन्हें अकारान्त कहा जाता है। यथा क ख ग इत्यादि। किन्तु वास्तव में व्यञ्जन वर्णों का आकार क् ख् ग् घ् ङ् इत्यादि है।

†जिह्वा के अग्र, मध्य तथा मूल भाग को स्पर्श करके उच्चारण होने के कारण इन सब वर्णों का नाम स्पर्श वर्ण है।

पाँचों को टवर्ग कहते हैं। त थ द ध न इन पाँचों को तवर्ग कहते हैं। प फ ब* भ म ये पाँचों पवर्ग हैं। य र ल व इन चारों को अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं † श ष स ह इनका नाम ऊष्म वर्ण है ‡ अनुस्वार और विसर्ग इन दोनों को अयोगवाह कहते हैं §

वर्णों का उच्चारण स्थान

४—अ आ ह इनका उच्चारणस्थान कण्ठ है, इनको कण्ठ्य वर्ण कहते हैं (Guttural).

५—क ख ग घ ङ इनका उच्चारणस्थान जिह्वामूल है; अतः इनको जिह्वामूलीय वर्ण कहते हैं (Guttural).

---

*वर्ग में होने के कारण इसका नाम वर्गीय ब है। बध्, बन्ध्, बल्, बाध्, बुध्, ब्रू इत्यादि धातु तथा इनसे बने हुए समस्त शब्दों का ब वर्गीय ब होता है। यथा—बन्धु, बन्धन, बध, बर, बल, बाल, बाढु, बडब, बाडब, बालुका, बाह, बुद्धि, ब्रह्मा, ब्रह्म, ब्राह्मण, इत्यादि इन सब शब्दों का ब वर्गीय ब है। इनके अतिरिक्त समस्त धातु तथा शब्दों का व अन्तःस्थ व है। सन्धि तथा प्रत्यय का व भी अन्तःस्थ व ही है।

†स्पर्श वर्ण तथा ऊष्मवर्ण इन दोनों में निविष्ट होने के कारण इनको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।

‡ ऊष्म वर्ण अर्थात् वायु-प्रधान वर्ण। इन चारों वर्णों का उच्चारण करने में वायु का प्राधान्य रहता है।

§ न् तथा म् के स्थान में अनुस्वार होता है और र् तथा स् के स्थान पर विसर्ग होता है। इसी लिये संस्कृत व्याकरण की वर्णमाला में इनका योग अर्थात् उल्लेख नहीं किया जाता। इस निमित्त ये अयोग हैं, किन्तु ऐसा न होकर भी प्रयोग का निर्वाह करने के कारण वाह है; अतः इनका दोनों प्रकार का धर्म्म होने के कारण अनुस्वार तथा विसर्ग का अयोगवाह नाम पड़ा है।

६—इ ई च छ ज झ ञ य श इनका उच्चारणस्थान तालु है; अतः इनको तालव्य वर्ण कहते हैं (Palatal)।

७—ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष इनका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है; इनको मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं (Cerebral)।

८—ऌ त थ द ध न ल स इनका उच्चारणस्थान दन्त है, इनको दन्त्य वर्ण कहते हैं (Dental)।

९—उ ऊ प फ ब भ म इनका उच्चारणस्थान ओष्ठ है, इनको ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं (Labial)।

१०—ए ऐ इनका उच्चारणस्थान कण्ठ तथा तालु है, अतः इनको कण्ठ्यतालव्य वर्ण (Palato-guttural) कहते हैं।

११—ओ औ इनका उच्चारणस्थान कण्ठ तथा ओष्ठ है, इनको कण्ठ्यौष्ठ्य वर्ण (Labio-guttural) कहते हैं।

१२—अन्तःस्थ वकार का उच्चारणस्थान दन्त तथा ओष्ठ है, इसको दन्त्यौष्ठ्य वर्ण (Dento-labial) कहते हैं।

१३—ँ अनुस्वार का उच्चारणस्थान नासिका है इसे अनुनासिक वर्ण (Nasal) कहते हैं।

१४—ः विसर्ग आश्रयस्थान भागी है; अर्थात् जब जिस स्वर वर्ण के परे यह रहता है, उसी स्वर वर्ण का उच्चारणस्थान ही विसर्ग का भी उच्चारणस्थान होता है।

सन्धि—प्रकरण

Euphonic Combination of Letters

सन्धि

१५—दो वर्ण परस्पर निकट होने से आपस में वे मिल जाते हैं। इसी मिलन को सन्धि कहते हैं। सन्धि दो प्रकार की होती है—स्वरसन्धि तथा व्यञ्जनसन्धि। स्वर वर्ण की स्वर वर्ण के साथ जो सन्धि होती है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। और व्यञ्जन वर्ण की व्यञ्जन वर्ण में अथवा व्यञ्जन वर्ण तथा स्वर वर्ण में जो सन्धि होती है, उसे व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि

Euphonic Combination of Vowels

१—अ+अ=आ ; राम+अयनम्=रामायणम्।
२—अ+आ=आ ; गुण+आकरः=गुणाकरः।
३—आ+अ=आ ; विद्या+अर्णवः=विद्यार्णवः।
४—आ+आ=आ ; हता+आशा=हताशा।
५—इ+इ=ई ; मुनि+इन्द्रः=मुनीन्द्रः।
६—इ+ई=ई ; कवि+ईश्वरः=कवीश्वरः।
७—ई+इ=ई ; सुधी+इन्द्रः=सुधीन्द्रः।
८—ई+ई=ई ; मही+ईश्वरः=महीश्वरः।
९—उ+उ=ऊ ; प्रभु+उपदेशः=प्रभूपदेशः।
१०—उ+ऊ=ऊ ; तरु+ऊर्ध्वम्=तरूर्ध्वम्।
११—ऊ+उ=ऊ ; वधू+उत्सवः=वधूत्सवः।

१२—ऊ+ऊ=ऊ ; भू+ऊर्ध्वम्=भूर्ध्वम्।

१३—ॠ+ॠ=ॠ ; पितृ+ॠणाम्=पितॄणाम् ।

१४—अ+इ=ए ; गज+इन्द्रः=गजेन्द्रः ।

१५—अ+ई=ए ; नर+ईशः=नरेशः । *

१६—आ+इ=ए ; तथा+इति=तथेति ।

१७—आ+ई=ए ; उमा+ईशः=उमेशः ।

१८—अ+उ=ओ ; पुरुष+उत्तमः=पुरुषोत्तमः ।

१९—अ+ऊ=ओ ; एक+ऊनः=एकोनः । †

२०—आ+उ=ओ ; महा+उपकारः=महोपकारः ।

२१—आ+ऊ=ओ ; यमुना+ऊर्म्मिः=यमुनोर्म्मिः ।

२२—अ+ऋ=अर् ; ग्रीष्म+ऋतुः=ग्रीष्मर्त्तुः । ‡

२३—आ+ऋ=अर् ; राजा+ऋषिः=राजर्षिः ।

२४—अ+ए=ऐ ; सर्व्व+एव=सर्व्वैव ।

२५—अ+ऐ=ऐ ; विपुल+ऐश्वर्य्यं=विपुलैश्वर्य्यम् ।

२६—आ+ए=ऐ ; तथा+एव=तथैव ।

२७—आ+ऐ=ऐ ; सेना+ऐक्यम्=सेनैक्यम् ।

२८—अ+औ=औ ; धान्य+औषधिः=धान्यौषधिः । §

---

*किन्तु स्व+ईरम्=स्वैरम् ; स्व+ईरिणी=स्वैरिणी ।

†अक्ष+ऊहिनी=अक्षौहिणी ।

‡किन्तु शीत+ऋतः=शीतार्त्तः; हिम+ऋतः=हिमार्त्तः ।

§विम्ब+ओष्ठः=विम्बौष्ठः अथवा विम्बोष्ठः ; स्थूल+ओतुः=स्थूलौतुः अथवा स्थूलोतुः ।

२९—अ + औ = औ ; चित्त + औदार्य्यम् = चित्तौदार्य्यम् ।

३०—आ + ओ = औ ; सदा + ओदनम् = सदौदनम् ।

३१—आ + औ = औ ; महा + औषधम् = महौषधम् ।

३२—इ + इ ईकार से भिन्न स्वर (अर्थात् अ आ उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ) होने पर इ के स्थान में य् होता है । अर्थात् इ + अ = य, इ + आ = या, इ + उ = यु, इ + ऊ = यू, इ + ऋ = यृ, इ + ए = ये, इ + ऐ = यै, इ + ओ = यो, इ + औ = यौ । यदि + अपि = यद्यपि ; अति + आचारः = अत्याचारः ; अभि + उदयः = अभ्युदयः ; प्रति + ऊहः = प्रत्यूहः ; मुनि + ऋषभः = मुन्यृषभः ; प्रति + एकम् = प्रत्येकम् ; अति + ऐश्वर्य्यम् = अत्यैश्वर्य्यम् ; पचति + ओदनम् = पचत्योदनम् ; अति + औदार्य्यम् = अत्यौदार्य्यम् ।

३३—ई + इ ईकार से भिन्न स्वर = ई के स्थान पर य् होता है ; अर्थात् ई + अ = य, ई + आ = या, ई + उ = यु, ई + ऊ = यू, ई + ऋ = यृ, ई + ए = ये, ई + ऐ = यै, ई + ओ = यो, इ + औ = यौ । यथा—नदी + अम्बु = नद्यम्बु ; देवी + आगता = देव्यागता; सखी + उक्तम् = सख्युक्तम् ; शशी + ऊर्ध्वगः = शश्यूर्ध्वगः ; बली + ऋषभः = बल्यृषभः ; गोपी + एषा = गोप्येषा ; बली + ऐरावतः = बल्यैरावतः ; सरस्वती + ओघः = सरस्वत्योघः ; वाणी + औचित्यम् = वाण्यौचित्यम् ।

३४—उ + उ उकार से भिन्न स्वर = उ के स्थान पर व होता है ; अर्थात् उ + अ = व, उ + आ = वा, उ + इ = वि, उ + ई = वी, उ + ऋ = वृ, उ + ए = वे, उ + ऐ = वै, उ + ओ = वो, उ + औ = वौ । यथा—अनु + अयः = अन्वयः ; सु + आगतम् = स्वागतम् ; मधु + इदम् = मध्विदम् ; साधु + ईहितम् = साध्वीहितम् ; मधु + ऋते = मध्वृते ; अनु + एषणम् = अन्वेषणम् ; अनु + ऐषिष्ट = अन्वै-

पिब ; पचतु+ओदनम्=पचत्वोदनम् ; ददातु+औषधम्=ददात्वौषधम्।

३५—ऊ+उ= ऊकार से भिन्न स्वर=ऊ के स्थान पर व् होता है। अर्थात् ऊ+अ=व, ऊ+आ=वा, ऊ+इ=वि, ऊ+ई=वी, ऊ+ऋ=वृ, ऊ+ए=वे, ऊ+ऐ=वै ; ऊ+ओ=वो, ऊ+औ=वौ होता है। यथा—सरयू+अम्बु=सरय्वम्बु ; वधू+आदिः=वध्वादिः ; तनू+इन्द्रियम्=तन्विन्द्रियम् ; तनू+ईश्वरः=तन्वीश्वरः ; सरयू+एधितम्=सरय्वेधितम् ; वधू+ऐश्वर्य्यम्=वध्वैश्वर्य्यम् ; सरयू+ओघः=सरय्वोघः ; वधू+औदार्य्यम्=वध्वौदार्य्यम्।

३६—ऋ+ऋ भिन्न स्वर=ऋ के स्थान पर र् (˚) रेफ होता है ; अर्थात् ऋ+अ=र, ऋ+आ=रा ; ऋ+इ=रि ; ऋ+ई=री ; ऋ+उ=रु ; ऋ+ऊ=रू ; ऋ+ए=रे ; ऋ+ऐ=रै ; ऋ+ओ=रो ; ऋ+औ=रौ। यथा—पितृ+अनुमतिः=पित्रनुमतिः ; पितृ+आदेशः=पित्रादेशः ; पितृ+इच्छा=पित्रिच्छा ; पितृ+ईहितम्=पित्रीहितम् ; पितृ+उपदेशः=पित्रुपदेशः ; पितृ+ऊहः=पित्रूहः ; पितृ+एषणा=पित्रेषणा ; पितृ+ऐश्वर्य्यम्=पित्रैश्वर्य्यम् ; पितृ+ओकः=पित्रोकः ; पितृ+औदार्य्यम्=पित्रौदार्य्यम्।

३७—ए+स्वर वर्ण=ए के स्थान पर अय् ; अर्थात् ए+अ=अय, ए+आ=अया, ए+इ=अयि, ए+ई=अयी, ए+उ=अयु ए+ऊ=अयू ; ए+ऋ=अयृ, ए+ए=अये, ए+ऐ=अयै, ए+ओ=अयो, ए+औ=अयौ होता है। यथा—शे+अनम्=शयनम् ; ने+अनम्=नयनम् ; जे+अति=जयति ; सञ्चे+अः=सञ्चयः ; शे+आते=शयाते ; अशे+आताम्=अशयाताम् ;

शे+इतम्=शयितम् ; अशे+इष्ट=अशयिष्ट ; शे+ईत=शयीत ; शे+ईरन्=शयीरन् ; शे+ए=शये ; शे+ऐ=शयै ।

३८—ऐ+स्वर वर्ण=ऐ के स्थान पर आय् ; अर्थात् ऐ+अ=आय, ऐ+आ=आया, ऐ+इ=आयि, ऐ+ई=आयी, ऐ+उ=आयु ; ऐ+ऊ=आयू ; ऐ+ए=आये ; ऐ+ऐ=आयै ; ऐ+ओ=आयो ; ऐ+औ=आयौ होता है । यथा—नै+अकः=नायकः ; विनै+अकः=विनायकः ; रै+आ=राया ; रै+इ=रायि ; रै+ए=राये ; रै+ओः=रायोः ।

३९—ओ+स्वर वर्ण=ओ के स्थान पर अव् ; अर्थात् ओ+अ=अव, ओ+आ=अवा ; ओ+इ=अवि ; ओ+ई=अवी ; ओ+उ=अवु ; ओ+ऊ=अवू ; ओ+ऋ=अवृ ; ओ+ए=अवे ; ओ+ऐ=अवै ; ओ+ओ=अवो । ओ+औ=अवौ होता है । यथा—श्रो+अनम्=श्रवणम् ; भो+अनम्=भवनम् ; पो+अनः=पवनः ; गो+आ=गवा ; भो+इता=भविता ; पो+इत्रम्=पवित्रम् ; गो+ए=गवे ; गो+ओः=गवोः * ।

४०—औ+स्वर वर्ण=औ के स्थान पर आव् होता है ; अर्थात् औ+अ=आव ; औ+आ=आवा ; औ+इ=आवि ; औ+ई=आवी ; औ+उ=आवु ; औ+ऊ=आवू ; औ+ऋ=आवृ ; औ+ए=आवे ; औ+ऐ=आवै ; औ+ओ=आवो ; औ+औ=आवौ । यथा—पौ+अकः=पावकः ; नौ+आ=नावा ; भौ+

---

*गो शब्द के ओकार के स्थान पर अव अथवा अव् होता है । यथा—गो+ईशः=गवेशः अथवा गवीशः ; किन्तु गो+इन्द्रः=गवेन्द्रः ; गौ+अक्षः=गवाक्षः ।

इनि=भाविनि ; भौ+उकः=भावुकः ; नौ+ओः=नावोः ; नौ+औ=नावौ ।

४१—पद के अन्त में स्थित ए+अ=एऽ (लुप्त अकार का चिह्न) पद के अन्त स्थित ओ+अ=ओऽ (लुप्त अकार का चिह्न होता है) । यथा—मुने+अनुगृहाण=मुनेऽनुगृहाण ।

व्यञ्जन सन्धि

Euphonic Combination of Consonants.

४२—त्+च=च्च ; द्+च=च्च ; त्+छ=च्छ ; द्+छ=च्छ । यथा—भवत्+चरणम्=भवच्चरणम् ; तद्+छाया=तच्छाया ।

४३—त्+ज=ज्ज ; द्+ज=ज्ज ; त्+झ=ज्झ ; द्+झ=ज्झ ; यथा—उत्+ज्वलः=उज्ज्वलः ; तद्+झनत्कारः=तज्झनत्कारः इत्यादि ।

४४—न्+ज=ञ्ज ; न्+झ=ञ्झ । यथा—महान्+जयः=महाञ्जयः ; गच्छन्+झटिति=गच्छञ्झटिति ।

४५—त्+श=च्छ ; द्+श=च्छ । यथा—जगत्+शरण्यः=जगच्छरण्यः ; तद्+शरीरम्=तच्छरीरम् ।

४६—न्+श=ञ्छ । यथा—महान्+शब्दः=महाञ्छब्दः ।

४७—त्+ह=द्ध ; द्+ह=द्ध ; उत्+हतः=उद्धतः ; विपद्+हेतुः=विपद्धेतुः ।

४८—च्+न=च्ञ ; ज्+न=ज्ञ । यथा—याच्+ना=याच्ञा ; यज्+नः=यज्ञः ।

४९—त्+ट=ट्ट ; द्+ट=ट्ट ; त्+ठ=ट्ठ ; द्+ठ=ट्ठ—यथा—उत्+टलति=उट्टलति ; तद्+टीका=तट्टीका ; पतद्+ठक्कुरः=पतट्ठक्कुरः ।

५०—त् + ड = ड्ड ; द् + ड = ड्ड ; त् + ढ = ड्ढ ; द् + ढ = ड्ढ । यथा—उत् + डीनः = उड्डीनः ; एतद् + ढक्का = एतड्ढक्का ।

५१—न् + ड = ण्ड; न् + ढ = ण्ढ । यथा—महान् + डामरः = महाण्डामरः ।

५२—ष् + त = ष्ट ; ष् + थ = ष्ठ । यथा—स्रष् + ता = स्रष्टा ; षष् + थः = षष्ठः ।

५३—त् + ल = ल्ल ; द् + ल = ल्ल ; न् + ल = ल्ल (नकार के पूर्व वर्ण में चन्द्रबिन्दु लगाया जाता है) । यथा—बृहत् + ललाटम् = बृहल्ललाटम् ; महान् + लाभः = महाँल्लाभः ।

५४—न् + स्वरवर्ण = न्न । धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः ।

५५—दीर्घ स्वर के परे न् + स्वर वर्ण = न (द्वित्व नहीं होता) । यथा—महान् + आग्रहः = महानाग्रहः ।

५६—न् + च = ंश्च ’ न् + छ = ंश्छ । यथा—हसन् + चलति = हसंश्चलति ; धावन् + छागः = धावंश्छागः ।

५७—न् + ट = ंष्ट ; न् + ठ = ंष्ठ । महान् + ठकुरः = महांष्ठकुरः ।

५८—न् + त = ंस्त ; न् + थ = ंस्थ । पतन् + तरुः = पतंस्तरुः ।

५९—म् + अन्तःस्थ वर्ण = म् के स्थान पर अनुस्वार ; म् + ऊष्मवर्ण = म् के स्थान पर अनुसार होता है । यथा—सत्वरम् + याति = सत्वरं याति ; मधुरम् + हसति = मधुरं हसति ।

नियमातिरिक्त—Exception.—सम् + राट् = सम्राट् ।

६०—म् + स्पर्श वर्ण = म् के स्थान पर अनुस्वार अथवा म् के स्थान पर स्पर्श वर्ण का पञ्चम वर्ण होता है । यथा—किम् + करोषि = किं करोषि अथवा किङ्करोषि ।

नियमातिरिक्त—

स्पर्श वर्ण परे रहने पर पदमध्यस्थ न् तथा म् के स्थान पर उसी स्पर्श वर्ण का पञ्चम वर्ण आदेश होता है । यथा—आशन्+कितः=आशङ्कितः ; गम्+ता=गन्ता ।

ऊष्म वर्ण परे रहने पर पद मध्यस्थ न् के स्थान में अनुस्वार होता है । यथा—दन्+शनम्=दंशनम् ।

६१—स्वर+छ=छ के स्थान में च्छ होता है । यथा—वृत्त+छाया=वृत्तच्छाया ।

६२—क+स्वर=क् के स्थान में ग् ; क्+वर्गीय तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण=क् के स्थान पर ग् ; क्+य, र, ल, व, और ह=क् के स्थान पर ग् होता है । यथा—दिक्+अन्तः=दिगन्तः ; वाक्+दानम्=वाग्दानम् ; धिक्+याचकम्=धिग्याचकम् ।

६३—त्+स्वर=त् के स्थान में द् ; त्+वर्गीय तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण=त् के स्थान में द् ; त्+य, र, ल, व=त् के स्थान में द् हो जाता है । यथा—जगत्+ईशः=जदीशः, जगत्+बन्धुः=जगद्बन्धुः इत्यादि ।

६४—क्+न=क् के स्थान में ङ् ; क्+म्=क् के स्थान में ङ् ; त्+न=न्न ; द्+न=न्न हो जाता है । यथा—दिक्+नागः=दिङ्नागः ; प्राक्+मुखः=प्राङ्मुखः ; जगत्+नाथः=जगन्नाथः इत्यादि ।

६५—:+च=श्च ; :+छ=श्छ । वायुः+चलति=वायुश्चलति ; रवेः+छविः=रवेश्छविः इत्यादि ।

६६—:+ट=ष्ट ; :+ठ=ष्ठ । भीतः+टलति—भीतष्टलति ।

६७—ः+त=स्त ; ः+थ=स्थ । उन्नतः+तरुः=उन्नतस्तरुः ।

६८—अः+अ=ओऽ । कः+अयम्=कोऽयम् ।

६९—अः+वर्गीय तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह=अः के स्थानों में ओ होता है । यथा—शोभनः+गन्धः= शोभनो गन्धः ; वामः+हस्तः=वामो हस्तः ।

७०—अः+अकार से भिन्न स्वर=विसर्ग का लोप हो जाता है । विसर्ग के लोप होने पर फिर दूसरी सन्धि नहीं होती । यथा —सूर्य्यः+उदेति=सूर्य्य उदेति । रामः+उवाच=राम उवाच इत्यादि

७१—आः+स्वर वर्ण अथवा वर्गीय तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह=विसर्ग का लोप होता है । यथा—अश्वाः+ इमे=अश्वा इमे ; छात्राः+यतन्ते=छात्रा यतन्ते ।

७२—अ आ से भिन्न स्वर के परे विसर्ग+स्वर वर्ण अथवा वर्गीय तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण वा य र ल व ह=विसर्ग के स्थान में र् होता है । यथा—हरिः+अयम्=हरिरयम् ; साधुः+जयति= साधुर्ज्जयति इत्यादि ।

७३—अकार के परे स्थित विसर्ग+स्वर वर्ण अथवा वर्गीय तृतीय चतुर्थ, पञ्चम वर्ण वा य र ल व ह=विसर्ग के स्थान र पर होता है । यथा – पुनः+अपि= पुनरपि ; स्वःगतः= स्वर्गतः इत्यादि ।

७४—र्+र=पूर्व्व के र् का लोप तथा उसके पूर्व्व का स्वर दीर्घ हो जाता है ; यथा –निः (निर्)+रोगः=नीरोगः इत्यादि ।

७५—सः+अ से भिन्न स्वर अथवा व्यञ्जन वर्ण=विसर्ग का लोप होता है । एषः+अ से भिन्न स्वर वा व्यञ्जन वर्ण=विसर्ग

का लोप होता है और लोप के पश्चात् पुनः सन्धि नहीं होती। यथा—सः+आगतः=स आगतः ; एषः+गच्छति=एष गच्छति।

७६—भोः+स्वर वर्ण अथवा वर्गीय तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह=विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप के पश्चात् पुनः सन्धि नहीं होती यथा—भोः+ईशान=भो ईशान।

नियमातिरिक्त Exception

विद्वस्+जनः=विद्वज्जनः ; पुम्+कोकिलः=पुंस्कोकिलः ; पुम्+चकोरः=पुंश्चकोरः ; भुवः+लोकः=भुवर्लोकः ; अहन्+अहः=अहरहः। इत्यादि शब्द निपात से सिद्ध होते हैं।

णत्व-विधान

७७—ऋ ॠ र मूर्द्धन्य ष इन चारों वर्णों के परे दन्त्य न होने पर वह मूर्द्धन्य ण हो जाता है। यथ—नृणाम्, तिसृणाम्, चतसृणाम् ; नॄणाम्, भ्रातॄणाम् ; दातॄणाम् ; चतुर्णाम् ; दोष्णा, पुष्णे।

७८—यदि स्वर वर्ण, कवर्ग, पवर्ग, य, व, ह, तथा अनुस्वार के मध्य व्यवधान हो तो दन्त्य न का मूर्द्धन्य ण हो जाता है। यथा—करणम्, कराणाम्, करिणा, गुरुणा, परेण, अर्केण, मूर्खेण, मृगेण, दीर्घेण दर्पेण, रेफेण, दर्भेण, द्रुमेण, रामेण, गर्व्वेण, ग्रहेण, बृंहणम् इत्यादि।

७९—इनके अतिरिक्त वर्ण व्यवधान होने पर दन्त्य न का ण नहीं होता। यथा—अर्चना, मूर्च्छना, अर्ज्जनम्, किरीटेन, षष्ठेन, मृडेन, द्रुढेन, वर्णानाम्, आर्त्तेन, विमर्द्देन, अर्द्धेन, विरलेन, स्पर्शेन, रसेन इत्यादि।

८०—पद के अन्त वाले दन्त्य न का मूर्द्धन्य ण नहीं होता। यथा—नरान्, हरीन्, गुरून्, भ्रातॄन्, इत्यादि। कई एक शब्दों में स्वाभाविक ण होता है।

स्वाभाविक णत्व

कण, कणा, कोण, कल्याण, कङ्कण, त्रिकण, गण, गुण, गौण, चाणक्य, पाणिनि, तूण, तूणीर, पाणि, वाणी, विपणि, वणिक्, निपुण, मत्कुण, वेणी, वीणा, वेणु, बाण, पुण्य, लवण, लावण्य, मणि, शाण इत्यादि।

षत्व विधान

८१—अ आ से भिन्न स्वर तथा क एवं र इन सब वर्णों के परे स्थित प्रत्यय के दन्त्य सकार का मूर्द्धन्य ष हो जाता है। यथा— मुनिषु, गुणिषु, नदीषु, सुधीषु, साधुषु, गुरुषु, प्रतिभूषु, वधूषु, भ्रातृषु, स्वसृषु, सर्व्वेषाम्, अन्येषाम्, गोषु, ग्लौषु, नौषु, वाक्षु, दिक्षु, चतुर्षु, गीर्षु इत्यादि।

८२—अनुस्वार तथा विसर्ग व्यवधान होने पर भी दन्त्य स का मूर्द्धन्य ष हो जाता है। यथा—हवींषि, धनूंषि, आशीःषु धनुःषु इत्यादि।

स्वाभाविक षत्व

आषाढ, इषु, ईषत्, उत्कर्ष, औषध, अभिलाष, दोष, द्वेष, पुष्प, भीष्म, मेष, महिष, मूषिक, वृष, वर्ष, पौष, षोडश, पुरुष, षट्, हर्ष, पाषाण, कष्ट, वाष्प, कल्मष, माष, काषाय, तुषार, कलुष इत्यादि।

सुबन्त प्रकरण

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी संस्कृत में ये सात विभक्तियाँ होती हैं। प्रत्येक शब्द के उत्तर ये सातों विभक्तियाँ होती हैं। विभक्ति-युक्त होने पर शब्द को सुबन्त तथा पद कहा जाता है।

प्रत्येक विभक्ति के तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन। शब्द में एकवचन की विभक्ति जोड़ने से एक वस्तु प्रतीत होती है, द्विवचन की विभक्ति जोड़ने से दो वस्तुओं का बोध होता है, और बहुवचन की विभक्ति युक्त होने से तीन से लेकर परार्ध पर्य्यन्त समस्त संख्याएँ ही विदित होती हैं।

विभक्ति की आकृति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	:	औ	अः
द्वितीया	अम्	औ	अः
तृतीया	आ	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी	अः	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	अः	ओः	आम्
सप्तमी	इ	ओः	सु

किस शब्द में कौन सी विभक्ति युक्त होने से कैसा पद होता है, इसे क्रमानुसार लिखा जायगा। सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति के ऐसा ही रूप होता है, किन्तु उसके एकवचन में कुछ विभिन्नता है। इसी कारण एकवचन का रूप पृथक् लिखा जायगा। जहाँ पर सम्बोधन के एकवचन का रूप पृथक् न लिखा जायगा, वहाँ पर प्रथमा के एकवचन तथा उसमें कोई भेद नहीं है, यह स्वतः ही समझ लेना चाहिये।

स्वरान्त शब्द

पुंलिङ्ग

अकारान्त—नर शब्द (Man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नरः	नरौ	नराः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नरान्
तृतीया	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	नराय	नराभ्याम्	नरेभ्यः
पञ्चमी	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः
षष्ठी	नरस्य	नरयोः	नराणाम्
सप्तमी	नरे	नरयोः	नरेषु
सम्बोधन	नर		

प्रायः समस्त अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप नर शब्द के समान ही होते हैं।

ह्रस्व इकारान्त पुंलिङ्ग "मुनि" शब्द (Sage)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति, सखि को छोड़ कर समस्त इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द मुनि शब्द के समान ही होते हैं।

इकारान्त पुंलिङ्ग 'पति' शब्द (Husband, master)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	पते		

ह्रस्व इकारान्त पुंलिङ्ग सखि शब्द (Friend)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	सखे		

दीर्घ ईकारान्त सुधी शब्द (Wise man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	सुधीः		

अनेक दीर्घ ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप सुधी शब्द के समान होते हैं। यथा—सुश्री ; हतधी इत्यादि।

ह्रस्व उकारान्त पुंलिङ्ग साधु शब्द (Sage)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो		

प्रायः समस्त पुंलिङ्ग ह्रस्व उकारान्त शब्दों के रूप साधु शब्द के समान ही होते हैं।

ऋकारान्त पुंलिङ्ग दातृ शब्द (Giver)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	दातः		

भ्रातृ, पितृ, जामातृ, नृ, इत्यादि कई एक भिन्न समुदाय ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप दातृ शब्द के समान होते हैं।

ऋकारान्त पुंलिङ्ग—भ्रातृ शब्द (Brother)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्

इनके अतिरिक्त शेष सब विभक्तियों में भ्रातृ शब्द के रूप दातृ शब्द के समान ही होते हैं।

पितृ, जामातृ, नृ इत्यादि कई एक शब्दों के रूप भ्रातृ शब्द के ही समान होते हैं।

केवल नृ शब्द के षष्ठी के बहुवचन में नॄणाम् नृणाम् ऐसे दो रूप होते हैं।

ओकारान्त—गो शब्द (Cow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः		

पुंलिङ्ग ओकारान्त समस्त शब्दों के रूप गो शब्द के समान ही होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

आकारान्त—लता शब्द (Creeper)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

प्रायः समस्त आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप लता शब्द के समान ही होते हैं।

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग—मति शब्द (Mind)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते		

समस्त ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप मति शब्द के ही समान होते हैं।

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग—नदी शब्द (River)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्याः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि		

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग—श्री शब्द (Beauty)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	श्रीः		

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में से बहुतेरे शब्द नदी शब्द के समान होते हैं और कुछ शब्द श्री शब्द के ही सदृश होते हैं। यथा—ह्री, धी, भी इत्यादि शब्दों के रूप श्री शब्द के समान होते हैं।

दीर्घ ईकारान्त—स्त्री शब्द (Woman)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि		

ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग—धेनु शब्द (Cow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो		

ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग समस्त शब्दों के रूप धेनु शब्द के समान होते हैं।

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग—वधू शब्द (Daughter-in-law, wife)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु		

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग—भ्रू शब्द (Eye-brow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्, भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
सम्बोधन	भ्रूः		

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में से बहुतेरे शब्द तो वधू शब्द के समान और कई एक शब्दों के रूप भ्रू शब्द के सदृश होते हैं। चमू (Army), चञ्चू (Beak), तनू (Body), प्रसू (Mother) इत्यादि शब्द वधू शब्द के तुल्य हैं। भू (Earth) शब्द के रूप भ्रू शब्द के समान होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग—दुहितृ शब्द (Daughter)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः
द्वितीया	दुहितरम्	दुहितरौ	दुहितॄः
तृतीया	दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः
चतुर्थी	दुहित्रे	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
पञ्चमी	दुहितुः	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
षष्ठी	दुहितुः	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्
सप्तमी	दुहितरि	दुहित्रोः	दुहितृषु
सम्बोधन	दुहितः		

केवल स्वसृ शब्द के अतिरिक्त समस्त ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप दुहितृ शब्द के समान ही होते हैं। मातृ, यातृ तथा ननान्दृ शब्दों के रूप दुहितृ शब्द के सदृश ही होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग—स्वसृ शब्द (Sister)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

इनके अतिरिक्त और सब विभक्तियों में स्वसृ शब्द के रूप भी दुहितृ शब्द के समान ही होते हैं।

नपुंसक लिङ्ग

अकारान्त—फल शब्द (Fruit)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

इनके अतिरिक्त दूसरी सब विभक्तियों में इसके रूप पुंलिङ्ग अकारान्त शब्द के समान ही होते हैं। प्रायः समस्त अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ह्रस्व इकारान्त नपुंसक लिङ्ग—वारि शब्द (Water)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	वारे, वारि		

दधि इत्यादि कतिपय शब्दों के अतिरिक्त प्रायः समस्त ह्रस्व इकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप वारि शब्द के समान ही होते हैं।

ह्रस्व इकारान्त नपुंसक लिङ्ग—दधि शब्द (Curd)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	दधे, दधि		

अक्षि, अस्थि तथा सक्थि शब्दों के रूप अविकल भाव से सब विभक्तियों में दधि शब्द के समान ही होते हैं।

ह्रस्व उकारान्त नपुंसक लिङ्ग—मधु शब्द (Honey)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	मधो, मधु		

प्रायः समस्त ह्रस्व उकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप मधु शब्द के समान ही होते हैं। जानु, (knee), दारु (wood) अम्बु (water), सानु (Tableland), इत्यादि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

सर्व्वनाम

सर्व्व शब्द (All, whole)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वः	सर्व्वौ	सर्व्वे
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वौ	सर्व्वान्
तृतीया	सर्व्वेण	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वैः
चतुर्थी	सर्व्वस्मै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्मात्	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
षष्ठी	सर्व्वस्य	सर्व्वयोः	सर्व्वेषाम्
सप्तमी	सर्व्वस्मिन्	सर्व्वयोः	सर्व्वेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि

अन्यान्य विभक्तियों में इसके रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं। सर्व्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वा	सर्व्वे	सर्व्वाः
द्वितीया	सर्व्वाम्	सर्व्वे	सर्व्वाः
तृतीया	सर्व्वया	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभिः
चतुर्थी	सर्व्वस्यै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्याः	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्याः	सर्व्वयोः	सर्व्वासाम्
सप्तमी	सर्व्वस्याम्	सर्व्वयोः	सर्व्वासु

'अन्य' शब्द का रूप भी बिल्कुल 'सर्व्व' शब्द के समान ही होता है। केवल नपुंसक लिङ्ग की प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन में "अन्यत्" ऐसा पद होता है।

पूर्व्व शब्द (East)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्व्वः	पूर्व्वौ	पूर्व्वे, पूर्व्वाः
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वौ	पूर्व्वान्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	पूर्व्वेण	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वैः
चतुर्थी	पूर्व्वस्मै	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्व्वस्मात्, पूर्व्वात्	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्व्वस्य	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषाम्
सप्तमी	पूर्व्वस्मिन्, पूर्व्वे	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि

अन्यान्य विभक्तियों के रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में, इसके रूप 'सर्व्व' शब्द के समान होते हैं, किसी विभक्ति तथा वचन में कोई भेद नहीं पड़ता। पर, अपर, दक्षिण, उत्तर इत्यादि कई एक शब्द 'पूर्व्व' शब्द के समान ही चलते हैं।

अस्मद् शब्द (I)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम् नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम् नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

तीनों लिङ्गों में ही इसके रूप समान होते हैं।

युष्मद् शब्द (You)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम् वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तीनों लिङ्गों में ही समान रूप होते हैं, कोई भेद नहीं होता।

इदम् शब्द (This)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम् एनम्	इमौ एनौ	इमान् एनान्
तृतीया	अनेन एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः एनयोः	एषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम् एनत्	इमे एने	इमानि एनानि

अन्यान्य विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान ही रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम् एनाम्	इमे एने	इमाः एनाः
तृतीया	अनया एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः एनयोः	आसु

किम् शब्द (Who; which; what)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

अन्यान्य विभक्तियों के रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

यद् शब्द (Who, which, that)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

अन्यान्य विभक्तियों में पुलिङ्ग के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

तद् शब्द (He, She, It)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

एतद् शब्द सब विभक्तियों तथा वचनों में अविकल रूप से तद् शब्द के समान ही होता है, केवल इसमें एकार मात्र अधिक होता है। और पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में इसके रूप में मूर्द्धन्य षकार का आदेश हो जाता है। यथा एषः, एषा, इत्यादि।

अदस् शब्द

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

शेष सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान ही रूप होते हैं

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

॥ इति शम् ॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.